मुल्य रु. ५-०० सलंग अंक ७३ मई-२०१३

श्री स्वामिनारायण

मासिक
प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख

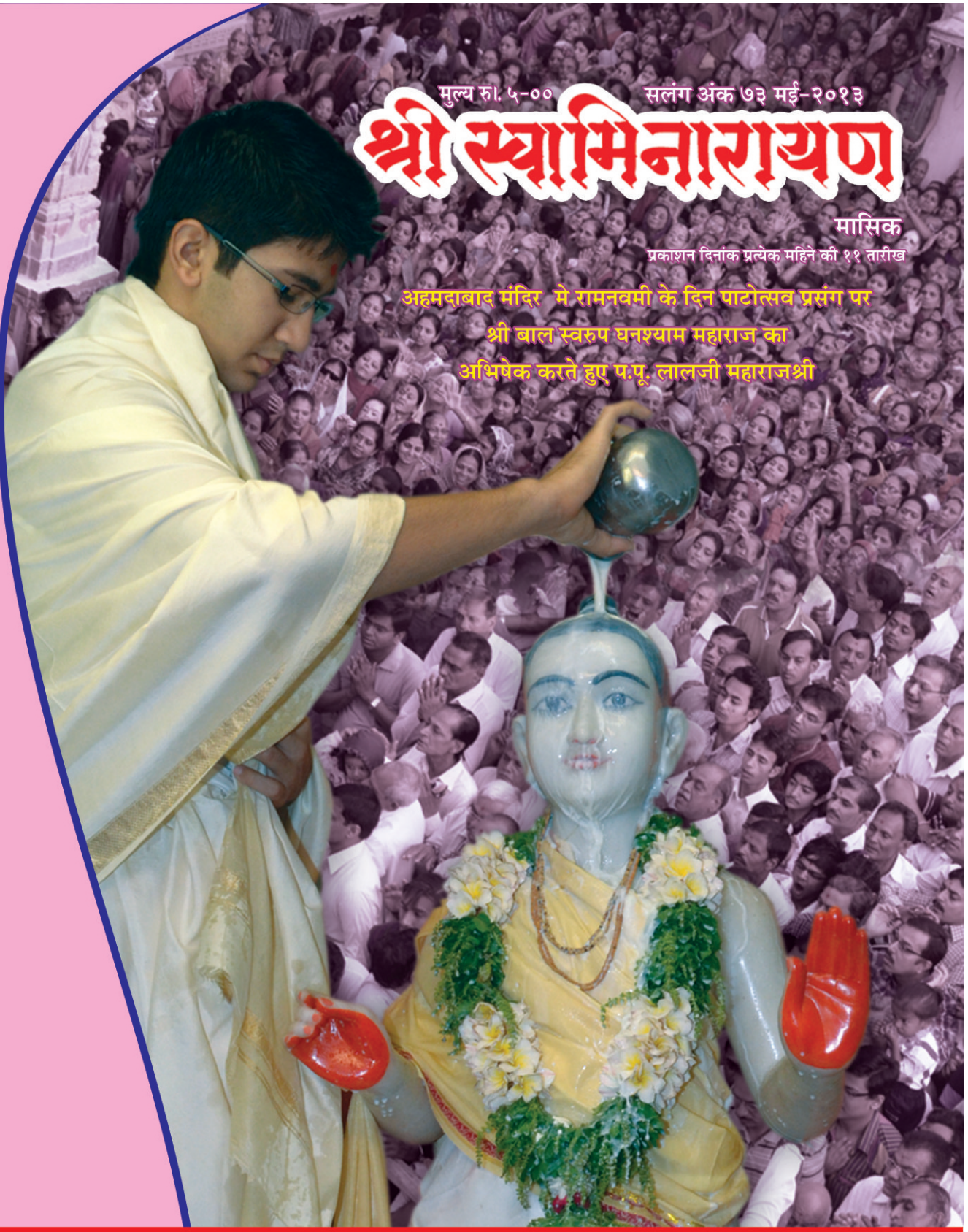

अहमदाबाद मंदिर मे रामनवमी के दिन पाटोत्सव प्रसंग पर
श्री बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का
अभिषेक करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१-२) प.पू. बड़े महाराजश्री के ६९ वें प्राकट्योत्सव प्रसंग पर पूजन करके आरती करते हुये हरिभक्त ! तथा विशाल सभा में दर्शन देते हुये श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप । (३) प.पू. बड़े महाराजश्री के प्राकट्योत्सव प्रसंग पर सभा में कीर्तन भजन करते हुए संत हरिभक्त । (४) अमदावाद मंदिर में रामनवमी - श्रीहरि प्राकट्योत्सव की आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री । (५) अमदावाद मंदिर में श्री हनुमान जयंती के निमित मारुतियज्ञ की विधि करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (६) विहार तथा कांकरिया मंदिर में श्री हनुमान जयंती के निमित्त मारुती यज्ञ में आरती उतारते हुए संतगण । (७) माधवगढ पाटोत्सव प्रसंग पर सभा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ७ ● अंक : ७३

मई-२०१३

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०६
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०७
०३.	सेवा के बत्तीस दोष	०६
०४.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद में से	०८
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१०
०६.	सत्संग बालवाटिका	१२
०७.	भक्ति सुधा	१४
०८.	सत्संग समाचार	१८

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● वंशपारंपरिक देश में ५०१-०० ● विदेश १०,०००-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

धर्म संबंधी साधन में एसा कौन सा साधन है जो एक के रखने से सभी धर्म रहते हैं । इसके अलांवा भगवान संबंधी जो भजन, स्मरण, कीर्तन ऐसा कौन साधन है जो आपत्तिकाल में सभी के नष्ट होने पर एक के रहने पर सभी रहे ? इसके बाद इसके उत्तर में महाराजने कहा कि धर्म संबंधी साधन में तो एक निष्कामपना होय तो सभी साधन आये, तथा भगवान संबंन्धी तो साधन है ही ऐसा निश्चय रहने पर सभी आता है ।(वच. लोया-६)

यदि परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का अचल निश्चय होगा तो सभी साधन स्वत: आजयेंगे ।

श्रीहरिने अमदावाद में सर्व प्रथम महामंदिर का निर्माण स.गु. आनंदानंद स्वामी से करवाया था । जिस महा मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य और तीनो ठाकुरजी के सिंहासनो का महा भगरीथ सेवा कार्य चालू है आप श्री यत् किंचित योगदान अवश्य करें । जिससे आपकी आनेवाली पीढी को भी विशेष श्री नरनारायणदेव का अचल निश्चय अविरत बना रहे और आपकी सभी प्रकार से उन्नति प्रगति तथा यश-कीर्ति फैले ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अप्रैल-२०१३)

१ सेर - मानकुवा (कच्छ) मांडवी (कच्छ) पदार्पण।

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

४ सायंकाल मोटेरा गाँव में पदार्पण।

७ से ९ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) पदार्पण।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर लुणावाडा (कडियावड) श्री गपणतजी, श्री हनुमानजी महाराज के मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर कथा प्रसंग पर पदार्पण।

१२ श्री जीतुभाई भगत के यहाँ कथा प्रसंग पर पदार्पण, घोडासर वहाँ से सीटीएम, महादेवनगर, नवा नरोडा तथा राणीप भक्तों के यहाँ पदार्पण।

१३-१४ अंजार (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर पदार्पण।

१५ से २४ केनेडा में सत्संग प्रचारार्थ पदार्पण।

२५ से २७ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) पदार्पण।

२८ प.पू. बड़े महाराजश्री का ६९ वाँ प्रागट्योत्सव अपनी शुभ उपस्थिति में सम्पन्न किये।

२९ से ३० तक नैपाल पदार्पण।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अप्रैल-२०१३)

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर लुणावाडा श्री गपणतिजी, श्री हनुमानजी की मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

२० रामनवमी चैत्र शुक्ल-९ अक्षर भुवन बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अपने वरद् हाथों से संपन्न किये।

२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर जामसर (हालार मूली देश) कथा प्रसंग पर पदार्पण।

सेवा के बत्तीस दोष

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

भगवान वेद व्यास रचित श्रीमद् भागवत महापुराण के छठ्ठे स्कन्धके आठवें अध्याय में अत्यंत चमत्कारी वज्र के प्रहार का जो प्रतिकार कर सके ऐसे नारायण कवच को विश्वरुप (देव गुरु बृहस्पति)ने इन्द्र को दिया, जिससे वृत्रासुर दैत्य के अस्त्र शास्त्रों से रक्षित हो सके । परिणाम स्वरुप राक्षसों का वधकर सके । भगवान स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री श्लोक ८५ में लिखा है कि जब भूतादि का उपद्रव हो तब नारायण कवच का पाठ करना चाहिये । नारायण कवच में कुल ४३ रक्षा कवच है । जिस में १४ वाँ रक्षा कवच ''हे देवर्षि नारदजी ? भगवान की सेवा में होने वाले दोष से रक्षा करना । आपको आश्चर्य होगा दोष कहाँ से आयेगा सेवा का दोष, अर्थात् सेवा करते समय अज्ञानता के कारण होने वाले दोष, ज्ञान का अभाव, श्रद्धा का अभाव, प्रति कूल सेवा, विपरीत बुद्धि होने से भगवान का अपराधहोता है सेवक भाव से रहित होने के कारण – अर्थात् भगवान को प्रसन्न करने की जगह पर उन्हें अप्रसन्न कर देते है । ऐसे दोष भक्ति मार्ग में विघ्नरुप है । इससे अपना पुण्य नष्ट हो जाता है । इन सेवा के दोषो से पापियों का प्रकोप बढ जाता है, जिससे वे सफल हो जाते है । भगवान वेदव्यासजीने पुराणों में सेवा के समय होने वाले ३२ प्रकारके दोषों का निरुपण किया है । उसे अवश्य समझना चाहिये (१) भगवान के मंदिर में वाहन पर बैठकर या पैर में चप्पल – जूता पहनकर नहीं जाना चाहिये । भगवान के मंदिर के सामने गाडी में बैठकर भगवान की तरफ देखना नहीं चाहिये । दरवाजे पर उतरजाना चाहिये । (२) रथयात्रा, रामनवमी, जन्माष्टमी एकादशी इत्यादि व्रतों को न करने का दोष तथा पूर्णिमा की आरती में दर्शन न करने का दोष ।(३) भगवान की मूर्ति के सामने प्रमाण न करने का दोष । (४) अशौच, अपवित्र (सूतक) इत्यादि में स्नान के विना दर्शन करने का दोष ।(५) भगवान को एक हाथ से प्रमाण करने का दोष । (६) भगवान के भोग के समय प्रदक्षिणा करने का दोष, इसके साथ प्रदक्षिणा करते समय श्री विग्रह के सामने क्षणभर दर्शन के लिये रुके विना दूसरी प्रदक्षिणा करने का दोष ।(७) भगवान के सामने पैर फैलाकर बैठने का दोष ।(८) भगवान के सामने वस्त्र से पैर मोडकर बांधने का दोष । (९) भगवान की मूर्ति के सामने सोने का तथा कीर्तन या कथा में सोने का दोष । (१०) भगवान के सामने बैठकर भोजन करने का दोष । (११) भगवान के सामने असत्य बोलने का दोष । (१२) भगवान के सामने ऊँची आवाज से बोलने का दोष । भगवान के सामने आपस में वात करने का दोष (फोन पर वात करने का दोष) ।(१४) भगवान के श्री विग्रह के सामने जोर की आवाज करने का दोष या इशारा करने का भी दोष । (१५) भगवान के भी विग्रह के सामने विवाद, झगडा, कलह करने का दो। (१६) भगवान के श्री विग्रह के सामने किसी को मानसिक कष्ट देने का दोष । (१७) भगवान की मूर्ति के सामने दूसरे पर दयावान होकर मन केन्द्रित करने का दोष । (१८) भगवान की मूर्ति के सामने निर्दय वचन कहने का दोष ।(१९) भगवान की मूर्ति के सामने कंबल (शाल) ओढकर या अपूर्ण वस्त्र पहन कर जाने का दोष । (२०) भगवान की मूर्ति के सामने किसी की निन्दा करने का दोष ।(२१) भगवान की मूर्ति के सामने किसी की प्रशंसा या अन्य की स्तुति करने का दोष ।(२२) भगवान की मूर्ति के सामने गाली देने या अश्लील वात करने का दोष ।(२३) भगवान के श्री विग्रह के सामने ढेकार लेना या अपान वायु छोड़ना इत्यादि का दोष । (२४) स्वयं की शारीरिक आर्थिक शक्ति पूर्ण होने पर भी सामान्य उपचार से भगवान की सेवा – पूजा रुपी दोष (जैसे ऋतु के अनुसार स्वयं नाना प्रकार के भोज्य पदार्थ का उपयोग करते है – यदि वैसा प्रभु को अर्पण न किया जाय तो दोष का कारण वनता है) । भगवान की सेवा पूजा स्वंय न करके नौकर चाकर से कराने का दोष (गाँवो के मंदिरो में प्राय: वेतन इत्यादि देकर ठाकुरजी की सेवा बहुत सारे लोग करवाते है, कितने लोग समर्थ होने पर भी, समय होने पर भी, पूजा

के पात्र होने पर भी अन्य को पूजा में रखना, सेवा करने के अयोग्य व्यक्ति को सेवा में रखना भी दोष बताया गया है। इष्टदेव के मंदिर की अपेक्षा अपने घर को अधिक वैभवशाली नही रखना चाहिये । उनसे न्यून रखना भी भक्ति है।(२५) भगवान को अर्पण किये विना कोई भी वस्तु का उपयोग न करना ही आत्मनिवेदी भक्त का लक्षण है । घर में जो भी भोजन वने वह भगवान को नैवेद्य में अर्पण किया विना लेना नहीं चाहिये । बाहर जाने पर फल-जल जो भी ले वह भगवदार्पण किये विना लेना दोष है।(२६-२७) जो ऋतुफल का खेत में होने वाला अन्नादिक पदार्थ है। भगवान को अर्पण करके लिया जा सकता है। इसीलिये कितने हरिभक्त वेतन या व्यापार में से जो नफा होता है उसमें से १०% या २०% प्रथम अर्पण करके उपयोग में लेते हैं। जो अर्पण किये विना उपयोग में लेता है वह दोष का भागी होता है । (२८) भगवान की तरफ पीठ करके बैठना या खडा रहना दोष है।(२९-३०) भगवान की मूर्ति के सामने अन्य को प्रणाम करना, गुरु आदि को वंदन करना, गुरु की स्तुति करना, जयघोष करना, संत या महापुरुष इत्यादि का चरण स्पर्श करना जिस देव का दर्शन करने आये हैं उसका द्रोह होगा और अपमान करने का दोष लगेगा । इसलिये मंदिर से बाहर आकर प्रणाम-वंदन करना चाहिये । लेकिन भगवान के सामने प्रणाम वंदन करना दोष है।(३१) अपने मुख से अपनी प्रसंसा करना जैसे आज मेरी तरफ से भगवान को रसोई है, आज मैने भगवानको चन्दनादि अलंकार अर्पण किया है । यहा मंदिर मैने बनाया है इत्यादि श्री विग्रह के सामने कहना भी दोष है । (३२) कोई श्री देव या देवी भगवान या भगवान के अवतार हों उनकी निंदा करता या सुनना दोष है। हे देवर्षि नारदजी ! इन बत्तीस प्रकार के दोषों से मेरा पतन होता हो तो रक्ष हो । ज्ञात या अज्ञात में जन्म-जन्मान्तर में उपरोक्त दोष हुए हों तो उनसे हमारी रक्षा हो . ऐसे दोष के अपराधसे वृत्रासुर दैत्य मेरा वधकर डालेगा ।ऐसे दोष से बचाने में हे नारदजी आप समर्थ है।

श्री नरनारायणदेव देश के सभी हरिभक्तों को दशांश विशांस दान के विषय में

समस्त श्री नरनारायणदेव देश के हरिभक्तों से नम्र निवेदन है कि, सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान ने जो शिक्षापत्री लिखी है उसमें १४७ वें श्लोक में आज्ञा की है कि -

''निज वृत्युद्यम प्राप्त धन धान्यादिकश्च तैः ।
अर्प्यो दशांशः कृष्णाय विशोंऽशस्त्विहदुर्बलैः ॥

गृहस्थामी का धर्म है कि अपने पुरुषार्थ से जो भी धनार्जन करता है उसमें से भगवान श्रीकृष्ण को दशवां भाग या विशवां भाग अपने सामर्थ्य के अनुसार अवश्य अर्पण करें। यह आज्ञा श्रीहरि की है - अतः इसका पालन सभी को अवश्य करना चाहिये।

देव को दिया जाने वाला १९ या वीस भाग में दान अन्त्र देना देव द्रोह है। श्री नरनारायणदेव देश के हरिभक्त श्री नरनारायणदेव के मंदिर में रुपये, अनाज, या अन्य जो पदार्थ दान देना चाहते हैं, उसे मंदिर की आफिस में देकर पक्की रसीद अवश्य प्राप्त करलें। किसी प्राईवेट संस्था या मुख्य मंदिर से संललग्न मंदिर या संस्था न हो तो वहाँ देव अंश का दान न करें, इसका ध्यान रखें। अपना कल्याण करने वाला, मोक्षदाता भगवान नरनरायणदेव है। इन्हीं को दान करने की श्रीहरि ने आज्ञा की है। उस आज्ञा का पालन होना चाहिये, आज्ञा का लोप सर्व विधहानि करने वाला होता है । जो दशवां या विशवां भाग श्री नरनारायणदेव को देंगे उनका सर्व विधकल्याण होगा । जितनी उत्तम आज्ञा का पालन होगा उतना सुख मिलेगा । अपने छोटे बड़े प्रत्येक मंदिर में भी प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा का पत्र होना आवश्यक है, यदि आज्ञापत्र न हो तो दान धर्मादिक वहाँ न करें।

प्रत्येक मंदिर के कोठारी अथवा उनके प्रतिनिधिउस गाँव के बड़े मंदिर में अन्न या रुपया, या अन्यत्र जो भी पदार्थ दान करेंगे पक्की रसीद प्राप्त करलें।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद में से

संकलन - गोरधनभाई वी. सीतापरा (बापुनगर)

अमदावाद मंदिर श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव प्रसंग पर (ता. १४-३-२०१३) : श्री नरनारायणदेव के चौखट पर आते ही दिव्य अनोखा शांति का अनुभव होता हो तो प्रत्यक्ष श्री नरनारायणदेव के चरण स्पर्श करने से कितनी दिव्य शांति मिलेगी ? आज के दिन हमें उसी चरण के स्पर्श का तथा अभिषेक करने का दिव्य लाभ मिलता है। ये देव इतने प्रत्यक्ष तथा प्रतापी है कि जो कोई भी इनके सामने आकर संकल्प करता है वह संकल्प तुरंत पुरा होजाता है। हाँ उसके लिये अपने में भावना होनी चाहिये । हमारे पास कितने ऐसे लोग है जो अपनी व्यथा लेकर आते है, हम उनसे इतना ही कहते है कि आप अपना संकल्प श्री नरनारायणदेव महाप्रभु के पास रखें वे निश्चित आप का संकल्प पूरा करेंगे।

हम किसी से किसी वस्तु का आग्रह नहीं करते। हम जो भी करते हैं वह देख कर हमारी संतान उसी का अनुकरण करती है। कल की वात है - गादीवाला तथा लालजी महाराज एवं श्रीराजा साथ बैठे थे । लालजी महाराज तथा श्री राजा से हमने पूछा कि कल श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव है तो आपलोगों ने क्या विचार किया है ? लालजी महाराजने कहा कि हम कल प्रातः अभिषेक करने आयेंगे । श्रीराजाने कहा कि हम कल स्कूलमें अवकाश रख देंगी। ऐसा कह कर वे लोग चले गये। बाद में हाथ में मेहंदी लगाकर आये। मैने पूछा कि मेहंदी क्यों लगाई ? उन्होंने कहा कि अपने बाप का उत्सव है, हमें इसका आनंद तो होगा न। तैयार तो होना पड़ेगा न ? गादीवालाने कहा कि, अब हमें महाराज के प्रसाद का भोजन कराइये अपने सत्संग का यह परिवार है। प्रकृति स्वभाव सभी के अलग-अलग हो सकते है, लेकिन हम सभी के बाप तो एक ही हैं । प्रकृति के अनुसार सभी अपना कार्य करते हैं। प्रकृति से अलग कोई नहीं है। यदि प्रकृति से अलग होते तो यहाँ आते ही नहीं । अक्षरधाम में ही रहते । अर्थात् सत्संग में रहकर अपनी प्रकृति के दोष को दूर करना होगा। यजमानश्रीने कहा कि हमें बड़े महाराजश्री के साथ धूमने में खूब आनंद आया। बड़े महाराजश्री के साथ रहने को मिला यह बड़ी भाग्य कही जायेगी। कारण कि हमें भी उनके साथ रहने का समय नहीं मिलता।

एप्रोच मंदिर के पाटोत्सव के उपलक्ष्य में रात्रि पारायण प्रसंग पर (ता. १७-३-२०१३) : भगवान के चरित्रों का श्रवण मनुष्य को शांति प्रदान करता है। समाचार पत्र आप बढ़े तो आपको मनोरंजन जरुर होगा, लेकिन उसके पढने से शांति नहीं मिलेगी। एक दिन पेपर पढने को न मिले तो ऐसा होने लगता है कि संसार में क्या हो रहा है ? भगवान का चरित्र पढने से या सुनने से भगवान में प्रीति होती है । शा.स्वा. निर्गुणदासजी जैसे संत के मुख से जब भगवान की कथा सुनते हैं तब भगवान में चित्त बड़ी सरलता से लग जाता है। कारण यह कि उनकी कथा में सतत भगवान के चरित्रों की बात आती है। भगवान के सिवाय कोई अन्य उदाहरण उनकी कथा में नहीं आता।

हम भगवान को दंडवत करते हैं। प्रदक्षिणा करते हैं। माला फेरते है, बड़े बड़े कार्यक्रम करते हैं। प्रत्येक का एक ही हेतु होता है कि भगवान में प्रेम बढे।

उनको भगवान के साथ कितना प्रेम था। महाराज गरम गरम रसोई बनाकर भोजन कराते थे । महाराज जब मंदिर बना रहे थे उस समय गंगा बा का मंदिर बीच में आ रहा था। महाराज उसे गिराने के लिये गंगा बा से कहा कि इसे गिरा देते है, गंगाबा ने मना कर दिया । स्वाभाविक बात रहेंगे कहाँ। इसके अलांवा जहाँ रहते है, उसमें ममत्व तो होता ही है। परन्तु महाराज को वह मकान गिराना ही था। गंगा बा एक दिन गाँव से बाहर गयी और महाराजने संत, पार्षद हरिभक्तों को इशारा कर दिया, सभी मिलकर उसे जमीन दोस्त कर दिये। गंगाबा जब आई तो देखा कि मेरा मकान जमीन दोस्त हो गया है, इसलिये सभी नाराज होकर जैसा तैसा बोलने लगीं । संतो को भी उलटा पलटा बोलने लगी, वहाँ पर एक सत्संग का द्रोही एक बाबा रहता था । हुंका-चीलम पीकर वहीं पर पड़ा रहता था। परंतु सत्संग का प्रभाव बढते ही उसके शिष्य घटने लगे। उसने विचार किया कि

स्वामिनारायण के साधु यहाँ रहे तो हमारा हरतरी के से नुकसान होगा, इसलिये उसने विचार किया कि बगलवाली वृद्धा के साथ यदि मैं अच्छा संबन्धकर लूं तो वह किसी को टिकने नहीं देगी। स्वामिनारायण के साधु जब इधर से जायेंगे तो हमें साधु अवश्य मिलंगे। मेरा हुक्का चीलम का काम चलता रहेगा।

एक दिन बाबा वृद्धा मां से कहा कि स्वामिनारायण के साधु ठीक नहीं है। उन्हें अपने गाँव में से भगा दीजिये। यह सुनकर वृद्धाने क्या किया खबर हैं ? बगल में से एख पत्तर हाथ में लिया बाबा को हुआ कि यह पत्थर स्वामिनारायण के साधुओं पर प्रहार करेंगी लेकिन उलटा हुआ वह पत्थर बाबा के मस्तक पर दे मारी और जोर से चिल्ला कर कहने लगी हे भगवान तथा भगवान के संत हमारे है, इसके अलाबा मेरे घर का प्रश्न है, इसमें आपको बोलने की कोई जरुरत नहीं। इसके बाद वह बाबा गाँव छोडकर भाग गया। इस तरह का इस सत्संगी में अपनापन सभी को रखना होगा। गंगाबा जिस राधाकृष्ण की पूजा करती थी उन मूर्ति को घनश्याम महाराज के बगल में रखा गया है। आज कथा में खूब सत्संगी एकत्रित हुये हैं, यह देख कर बड़ा आनंद आ रहा है। सत्संगी व्यापकता बढ रही है। यहाँ पर संत सत्संग करवाते थे। निर्गुण स्वामी का सभी को मार्गदर्शन मिल रहा है। कथा में पुरुषों की अपेक्षा बहनों की भीड अधिक दिखाई देती है। रात्रि का साढे दश बजा है, पुरुषों को सायद इस समय भी काम होगा, ऐसा लगता है। (इस व्यंझोक्ति को सुनकर सभी हंसने लगे) ।

प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वचन में से एप्रोच मंदिर के पाटोत्सव के उपलक्ष्य में रात्रि पारायण प्रसंग पर (ता. २०-३-२०१३) : यहाँ पर कोई सुतरिया होगा तो कोई रादडिया होगा ,इस तरह सभी विविधउपाधिवाले होंगे, परंतु अंत में सभी एप्रोच वाला तो है ही। यह वात सभी को सदा याद रखनी चाहिये। महाराजने मुक्तानंद स्वामी से कहा कि हमें सभी का कल्याण करना है। परंतु जब हम आप नहीं रहेंगे तो क्या होगा ? स्वामीने कहा कि इसका उत्तर आप ही दीजिये। महाराजने कहा कि हमें जो मिले हैं उनका तथा जो नहीं मिले है उनका भी कल्याण करना है। आज सभी को अक्षरधाम लेजाना है। महाराजने कहा कि अब आप आगे का कहिये। महाराज आप ही कहिये। तब महाराजने कहा कि जो सत्संगी का पानी पीलेगा उसका भी कल्याण करना है।

यहाँ एकवात सभी को समझने लायक है। प्रायः सभी रोग पानी से फैलते है। प्रदूषित पानी पीने से अनेक तकलीफ होती है। इसलिये पानी शुद्ध होना आवश्यक है। सत्संगी पानी गारकर पीते है। इसलिये वह शुद्ध होता है और सभी का कल्याण करता है। शुद्ध पानी किसे कहा जायेगा खबर है ? महाराज का निश्चय, उपासना समझदारी, महाराज तथा श्री नरनारायणदेव में लेश मात्र भी फेर न समझना ही गारा हुआ पानी कहा जायेगा। यही शुद्ध पानी सभी का कल्याण करेगा। ऐसा पानी न हो औ प्रदूषित हो अर्थात् गंदा पानी और साफ पानी की समझ के विना उसे ग्रहण करें तो दूसरे को भी बिगाड़ता है। महाराज ने वचनामृत में कहा है कि हमारा तथा नरनारायणदेव में मन मेल है। महाराज में तथा श्री नरनारायणदेव में यदि भेद मानेंगे तो इस जन्म में अक्षरधाम नहीं जापायेंगे और दूसरे जन्म में सत्संगी के घर जन्म लेना पड़ेगा। अधिक समझ में न आवे तो ''वचनामृत में श्री नरनारायणदेव'' नामक पुस्तक मैने लिखा है उसे अवश्य पढिये गा। और मनन भी करियेगा।

अपने आगामी उत्सव

वैशारव शुक्ल-१५ ता. २५-५-२०१३ शनिवार श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार का पाटोत्सव।
वैशारव कृष्ण-१/२ ता. २६-५-२०१३ रविवार श्री स्वमिनारायण मंदिर पेथापुर पाटोत्सव।
वैशारव कृष्ण-५ ता. २९-५-२०१३ बुधवार श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका पाटोत्सव।
ज्येष्ठ शुक्ल-२ ता. १०-६-२०१३ सोमवार श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रांतीज पाटोत्सव।
ज्येष्ठ शुक्ल-५ ता. १४-६-२०१३ शुक्रवार श्री स्वामिनारायण मंदिर वाली (राजस्थान) पाटोत्सव।
ज्येष्ठ शुक्ल-९ ता. १८-६-२०१३ मंगलवार श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर पाटोत्सव।
ज्येष्ठ शुक्ल-११/१२ ता. २०-६-२०१३ गुरुवार सर्वोपरिधाम छपैया श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

गुजरात में कहावत है कि बारह गाँव में बोली बदलती है उसी तरह गुजरात में पगडी भी बदलती है। जब कि आज के युग में कोई पगड़ी बांधे दिखाई नहीं देता है, रीवाज के अनुसार यत्र तत्र दिखाई देता है। परंतु श्रीजी समकालीन समय में गुजरात में अलग-अलग प्रदेश की पगड़ी श्रीजी महाराज के वन विचरण के समय भक्त उन्हें भेंट करते थे और उसे वे धारण भी करते थे। स्वयं श्रीजी महाराज पगड़ी बांधने में पारंगत थे। नंद संतो के रचित अनेक कीर्तनों में अलग अलग पगड़ी का वर्णन मिलता है। ऐसी पगड़ियों को म्युजियम में दर्शनार्थ रखा गया है। उन पगड़ियों के दर्शन से श्रीजी महाराज के लीला चरित्रों का स्मरण होता है। उन सभी पगड़ियों को मूल स्वरुप में रखा गया है इससे दर्शनार्थियों को दर्शन के समय श्रीजी महाराज के स्वरुप का दर्शन हो जाता है। साथ ही उस दिव्यता का अनुभव होने लगता है। रंग खेलते समय पहनी हुई पगड़ी में आज भी पसीनों के चिन्ह का दर्शन होता है। कितनी पगड़ी में तो पुष्प की सुगंधभी आती है। इस प्रत्येक पगड़ी में श्रीजी महाराज के स्पर्श का अनुभव होता है। यहाँ की प्रत्येक पगड़ी में अलग-अलग इतिहास छुपा हुआ है। प्रत्येक पगड़ी में श्रीजी महाराज का स्मरण समाया हुआ है। आप जब भी म्युजियम के दर्शनार्थ पधारे उस समय इन दिव्य पगड़ियों का दर्शन अवश्य कीजियेगा।

આપણા સંપ્રદાયના વ્રત ઉત્સવોનો નિર્ણય પુસ્તક રૂપે પ્રસિધ્ધ થાય છે. પરંતુ આ વર્ષથી તે નિર્ણયની એપ તૈયાર કરી એપલ સ્ટોર પર મુકાઈ છે. જે આઈફોન અને આઈપેડમાં ડાઉનલોડ કરી ઉપયોગ કરી શકાય છે. તથા ગૂગલ પ્લે પર પણ ઉપલબ્ધ કરાઈ છે. આ એપ્સ આપણાજ સત્સંગી શ્રી ઉમંગભાઈ હરીશભાઈ પટેલ (કૌશલમ્)દ્વારા તૈયાર કરાઈ છે. અગાઉ પણ તેમણે પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રીના સ્વરમાં શિક્ષાપત્રી ની એપ્સ તૈયાર કરી એપલ સ્ટોર પર ઉપલબ્ધ કરી છે અને શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમની વેબસાઈટ પણ તેઓશ્રીએજ તૈયાર કરી છે. વળી હાલ "સ્વામિનારાયણ ડોટ ઈન" સાઈટ પર સ્મૂથ લાઈવ સ્ટ્રીમીંગ પણ તેમને જ આભારી છે. પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી અને પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીએ તેમના પર અતિ રાજી થઈ આશીર્વાદ પાઠવ્યા હતા.

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि अप्रैल-२०१३

रु। २५,०००/-	अ.नि. लालजीभाई लवजीभाई पटेल अमदावाद अ.नि. अमृताबहन लालजीभाई पटेल, अ.नि. हसमुखभाई लालजीभाई पटेल, जयंतीभाई तथा जयप्रकाशभाई तथा अश्विनभाई प्रसादी के स्तम्भ हेतु पूर्व में रु। १,००,००/- दिये हैं। इस तरहु कुल १,२५,०००/- जमा है।
रु। ११,१११/-	रमेशचंद्र वीरचंदभाई पारेख, अमदावाद-बकुबा, जयेश, नीलीया, मोनील, पूजन पारेख परिवार।
रु। ११,०००/-	निलेषभाई शाह(होंगकोंग)
रु। ११,०००/-	विकल्प धीरजभाई (अमदावाद)
रु। ११,०००/-	प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवाला की प्रसन्नता के लिये भारतीबहन अशोकभाई ठक्कर।
रु। ११,०००/-	श्री जनार्दनभाई अरजणभाई मोरी, कालीयाणा।
रु। १०,०००/-	हितेषभाई सुधाकरभाई त्रिवेदी, अमदावाद
रु। १०,०००/-	योगेशभाई वाडीभाई पटेल
रु। ५,०००/-	गोपालभाई मेधजीभाई टांक
रु। ५,००१/-	पार्वतीबहन गोपालबाई टांक
रु। ५,०००/-	श्रीहरि ट्रेडर्स
रु। ५,०००/-	शारदाबदेन हरिभाई गढिया (नवा नरोडा)

एक हरिभक्त सत्संगीबहन की तरफ से करीब ६०,०००/- रुपये की कीमत का सोने का मंगलसूत्र पेटी में से मिला है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (अप्रैल-२०१३)

ता. १०-४-१३ जय मनोजभाई ब्रह्मभट्ट - नारणपुरा (वर्तमान यु.एस.ए.) जन्म दिन निमित्त
ता. ११-४-१३ श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - विसनगर कृते उधयनभाई महाराजा।
ता. १६-४-१३ जयदीपभाई हरिभाई गढिया - नवा नरोडा न्युयोर्क फेशन
ता. २०-४-१३ दयालजीभाई मोतीभाई टांक - जीरागढ वाला। (सुरत) गोपालबाई मेधजीबाई टांक जीरागढवाला (सुरत)
ता. २८-४-१३ भीखाभाई विसाभाई पटेल - डांगरवावाला (वर्तमान यु.एस.ए.) कृते मधुबहन भीखाभाई पटेल
ता. २९-४-१३ अश्विनभाई परबतभाई डभासिया (लंडन)

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा।

नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी
(गांधीनगर)

नियम में रहने से भगवान की कृपा होती है

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

पूर्व देश में मातली नामक गाँव में प्रताप भानु नामक एक राजा बहुत योग सिद्ध था । राजा होते हुए भी वह योगी था । शतानंद स्वामी को वह मिला, प्रणाम करके उनसे अपने महल में जाने के लिये निवेदन किया । स्वामी उनके साथ महल में गये । राजा उन्हे अपने आसन पर बैठाकर कहा कि - स्वामीजी ! मैं बहुत दुःखी हूँ, योग सिद्ध हूँ, मैं अपनी इच्छानुसार समाधिस्थ होता हूँ । एक-एक वर्ष तक समाधिमें स्थिर रहता हूं । इतना सिद्ध हूं, मुझे कोई बंधन नही है, आसक्ति नही है, राज्य या जगत की, सम्पत्ति की कोई आसक्ति नहीं है । फिर भी मै मानसिक कष्ट से घिरा हूँ, आप दया कीजिये।

शतानंद स्वामीने कहा, जल्दी बोलो क्या कष्ट हैं ? मुझे कष्ट इस बात का है कि मै इतनी योग सिद्धि करता हूँ तो भी मेरे मन में होता है कि मेरा मोक्ष होगा या नहीं ? यह प्रश्न प्रताप भानु का ही नहीं है, हम सभी का भी है ? थोड़ा शांति से विचार करना है । आप को मुंबई, कलकत्ता, छपैया जाना हो और बस या रेलवे में खूब भीड़ चलती हो, चारो तरफ से भीड-भीड की आवाज हो, लेकिन आप जिस दिन जाने वाले हों और आपका टिकट रिजर्वेशन कन्फर्म होगया हो तो भीड़ की बूमा बूम से क्या प्रयोजन ? आप को संतोष हो जायेगा कि हमारी सीट तो आरक्षित है, चिन्ता की क्या बात । फिर भी मन की व्यग्रता बनी रहती है, लेकिन मन की व्यग्रता उसे रहती है जो शंकाशील रहता है । शंकाशील व्यक्ति की बुद्धि स्थिर नहीं रहती जिससे ''शंसयात्मा विनश्यति'' ।

ठीक यही स्थिति प्रताप भानु राजा की है । आप को भी अपनी अन्तरात्मा से पूछना चाहिये कि हम जो रिजर्वेशन कराये है वह कन्फर्म है या नहीं ? जब आपको विश्वास हो जायेगा तब निश्चित आपका कल्याण होगा अन्यथा धक्का मुक्की में आप कही फेका जायेगे ।

प्रताप भानु राजा शतानंद स्वामी से कहता है कि इतनी सारी सिद्धिया मेरे पास है, मैं योग सिद्ध हूँ, मै भागवत सुनता हूँ, जो भागवत राजा परिक्षित को सात दिन में मोक्ष दे दिया उसके सुनने के बाद भी विश्वास नहीं होता कि मेरा मोक्ष हो गया या नहीं ? इसका क्या कारण ?

शतानंद स्वामी कहते हैं कि - राजन् ! जब किसी से ज्ञान प्राप्त करना हो तो बैठकर करना चाहिए, अतः पहले आप बैठजाइये । खड़े-खड़े ज्ञान नहीं दिया जाता । बैठकर दिया या लिया गया ज्ञान हृदय में स्थिर होता है । इसीलिये गाँव में कहावत है कि घोड़े पर चढकर उपदेश नहीं दिया जाता । आज के जमाने में स्कूटर पर कोई सवार हो उसे कहें कि भाई रुको हम आप को ज्ञान का उपदेश करते हैं इसे भी घोड़ा पर चढकर दान प्राप्त करने वाली वात कही जायेगी । जब भी किसी को ज्ञान दिया जाय तो स्थिरता से बैठकर तथा मन स्थिर हो गया हो तभी ज्ञान देना उचित होगा । किसी के घर गये हों और वह कुर्सी पर बैठा हो तो उसे भी ज्ञान नहीं देना चाहि, नीचे स्थिरता से बैठा हो तो ही ज्ञान देना चाहिये । स्वामी ने राजा प्रतापभानु को नीचे बैठाया । अब वे कहने लगे कि राजन् ! मैं तुम्हरे कल्याण का, मोक्ष का उत्तरदायित्व लेता हूँ । स्वामी समर्थ थे, तभी तो इस तरह कहे अन्यथा दूसरा कौन

तत्काल रिजर्वेशन की वात कह सकता है । जिसकी बहुत पहुंच होती है वही ऐसा कहता है किस ता.का. चाहिए । स्वामी ने कहा कि तेरे मोक्ष का रिजर्वेशन मैंने कर दिया । इस समय धरती पर भगवान स्वामिनारायण प्रगट विराजमान है । परमात्माके प्रभाव से अनेकानेक का उद्धार होता है।

स्वामिनारायण भगवान की कृपा से कल्याण हो जाता है । इसमें शंका का स्थान नहीं है । लेकिन उसके लिये आवश्यक है - भगवान स्वामिनारायण की आज्ञा का पालन करना, उनके बताये ११ नियम का पालन करना । उन्हीं की भजन से तुम्हारा कल्याण होगा । इसमें शंका का स्थान नहीं है । ''निर्विकल्प उत्तम अति, निश्चय तब घनश्याम'' इस पद में प्रेमानंद स्वामीने जो इग्यारह नियम बताये है । उन्हें शतानंद स्वामीने प्रताप भानु राजा को संकल्प के साथ सुनाते है।

प्रतापभानु राजा योगी होते हुए भी नियम में परिपक्व नहीं थे इस लिये योग में सिद्ध नहीं हो पाये । चाहे कितना भी बुद्धिमान मनुष्य हो, ज्ञानी हो, फिर भी इष्टदेव के द्वारा बताये गये नियम ने हों तो वह सफल नहीं होता । इसलिये श्रीहरिने सच्चे हरिभक्त की व्याख्या - नियम, निश्चय, पक्ष जिसमें है वही सच्चा हरिभक्त है - इस तरह की है । शिक्षापत्री में स्वामिनारायण भगवानने जो आज्ञा की है उसमें से संग्रहीत ११ नियम ही पंचवर्तमान के नाम से जाने जाते हैं । इग्यारह नियम पालने की प्रतिज्ञा लेने मात्र से राजा प्रतापभानु की स्थिति बदल गई । भगवान का दर्शन हुआ । जीव में मोक्ष की प्रतीत हुई ।

●

अच्छा विचारोगे तो अच्छा होगा

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

स्वामिनारायण भगवान के प्रगट होने का समय आया तो सर्वत्र आनंद ही आनंद पैल गया था । धरती से लेकर धाम तक सार्वत्रिक आनंद ही आनंद । परंतु कालीदत्त के भीतर मास का अनुभव हो रहा है । उसे अनेकों अपशकुन का आभास हो रहा था । रात्रि में निद्रा में भयंकर दृश्य दिखाई देता है । छपैया में भगवान प्रगट होने वाले है ऐसा उसे आभास हो चुका था ।

इस तरफ कालीदत्त ने विचार किया कि - जिससे अपशकुन होता है, उस शत्रु का जन्म हो गया है । भगवान जब प्रगट होते हैं तब सभी को आनंद होता है लेकिन असुरों का त्रास होता है ।कारण यह कि वे प्रभु को शत्रु मानते हैं । कालीदत्त कृत्याओं को उत्पन्न किया - कृत्या किसको कहते है ? जो खराब कृत्य करती है उसे कृत्या कहते है । उन सभी को आज्ञा दिया कि तुम सब जाकर जो अभी उत्पन्न हुआ है और हमारा शत्रु है उसका नाश कर आओ ।

प्रभु को छोटा बालक समझकर वे कृत्याएं बधकरने आयी । जिसके दर्शन मात्र से हृदय में आनंद हो, शुभ संकल्प तत्काल सिद्ध होते हैं । ऐसे प्रभुको मारने के लिये कृत्यायें आयी और घनश्याम को उठाकर ले गयी । जिन्हें देखकर भक्ति माता मूर्छित हो गयी । धर्मदेव हनुमानजी की स्तुति करने लगे । हनुमानजी कुल देवता है, स्मरण मात्र से प्रगट होते हैं और कृत्याओं को अपनी पूछ में बांधकर पछाड़ने लगते है । घनश्याम ने देखा कि रामावतार में ताडुका का बधकिये, कृष्णावतार में पूतना का बधकिये लेकिन इस अवतार में किसी का बधनहीं करना है । सभी को तारना है । इस अवतार में सभी का सुधार करना है । महाराज की इच्छा से हनुमानजी सभी कृत्याओं को छोड़ देते हैं । घनश्याम को अपनी गोद में लेकर हनुमानजी घर लेकर आये । धर्म देव के हाथ में सौंप देते हैं । सभी आनंदित होते हैं ।

सज्जनों ! सूर्योदय का आनंद मनुष्य, पशु, पक्षी, वनस्पति सभी को होता है । लेकिन उलूक का नही होता । इसी तरह की महिमा भक्तों के तथा संतो के मन में होती है । कालीदत्त जैसे असुर को नहीं होता ।

भगवान किसी के शत्रु नहीं होते, परमात्मा सभी के मित्र होते हैं । भगवान के साथ जो जैसा भाव करेगा वैसा भगवान भी उसके प्रति भाव रखेंगे । इसलिये मंदिर में भगवान का दर्शन करने जब जाओं तो शुभ संकल्प करके जाओ इससे सदा श्रेय करेंगे ।

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से "स्त्री जो चाहे वह कर सकती है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

विवाह से पूर्व लड़कियां अपने पिता की छाया में रहती है। विवाह के बाद अपने पति की आज्ञा में रहती है। वृद्धावस्था में अपने बेटों के आश्रय में रहती है, फिर भी महिलाओं पर ही घर का सम्पूर्ण वातावरण निर्भर करता है। आप देखेंगी कि एक लड़की जब कुंवारी होती है तब उसके मन में नाना प्रकार के विचार आते है - मुझे ऐसा पति मिलेगा। ससुराल में जाकर मैं ऐसा करुंगी। इस तरह जीवन की धारा होगी। इस तरह अनेकों विचार उसके मन में आते हैं। अनंत कल्पनायें होती हैं। जब वह ससुराल जाती है तब उसकी कल्पनायें पूरी नहीं होती और उसे परिस्थिति के अनुरुप होना पड़ता है। उसमें परिस्थिति के अनुकूल होने की ताकत है। स्त्री जो चाहे वह कर सकती है ऐसी उसमें शक्ति है। स्त्री के हाथ में बहुत कुछ है। बालक को गर्भ में लाना, गर्भ में संस्कार देना, गर्भ से बाहर आने के बाद बालक को योग्य पोषण योग्य समझ देना, इसके बाद उस बालक को पुन: गर्भ में न जाना पड़े गर्भ का दु:ख पुन: सहन न करना पड़े उसके लिये वैसी शक्ति देना तथा वैसा ही संस्कार देना। ये सभी कार्य बड़े महत्व के हैं। कारण यह कि सभी माताये ऐसा चाहती हैं कि मेरा बालक सुखी हो। तो सच्चा सुख किस में है ? सच्ची मां तो वह है जो उस बालक का कल्याण चाहती हो तो वह यह चाहे कि जिस तरह मेरे गर्भवास में यह बालक दु:ख सहन किया अब दूसरी मां के उदर में गर्भवास दु:ख इस बालक को न मिले। इसका कारण यह कि - गर्भवास का दु:ख अति भयंकर होता है।

जननी जीवो रे गोपी चंदनी
पुत्र ने प्रेर्यो वैराग्यजी,
उपदेश आप्यो एणी पेरे,
लाग्यो संसारीडो आगजी,
धन्य धन्य माता ध्रुव तणी,
कह्या कठण वचनजी,
राज साज सुख पर हरी,
वेगे चाल्या वनजी।

संस्कार ही सभी का मूल है। आप एक वीज जमीन में डालते हैं वह बीज सूखा रहता है। फिरभी विश्वास रहता है कि यह सूखा जरुर है लेकिन इसमें अंकुर अवश्य आयेगा। इसी तरह जीवन में जैसा संस्कार का रोपण करेंगे वैसा फल मिलेगा। अपनी सन्तान को वारस में संपत्ति नहीं देंगे तो चलेगा, लेकिन अच्छा संस्कार दिये रहेंगे तो जीवन हीरे की तरह चमकेगा और धन भी कमालेगा। आपकी सन्तान योग्य मार्ग पर चल रही है या नहीं इसका ध्यान रखना जरुरी है। आपके बालक १४ वर्ष से १९ वर्ष तक में विशेष जानने की इच्छा होती है। इस समय उनका ध्यान रखना बहुत आवश्यक होता है। इस समय उन बालकों के प्रति संस्कार सिंचन के साथ काफी मेहनत करनी पडेगी और बाह्य जगत के साथ आध्यात्मिक जगत के ज्ञान का सिंचन हो यह बहुत जरुरी है। छोटे बच्चों की सम्पूर्ण अपेक्षा की पूर्ति माता पिता नहीं करती क्योंकि बालक विगडजाता है। इसलिये आप अपनी संतान के लिये ऐसे आदर्श गुरु बने कि जीवन में जब भी गुरु की याद करनी हो तब आप ही याद आवें। हमें यदि कोई गुरु के याद की वात करे तो मेरी मां ही याद आती हैं। इसलिये आप अपनी संतान को इतना उत्तम संस्कार दें किवह संस्कार उनके जीवन में काम आवे। एक स्त्री इतनी आदर्श वन सकती है कि अपनी कोंख से जन्म

देने वाले बालक को पुन: दूसरे की कोंख में न जाना पड़े । स्त्रियां सभी परिस्थिति को अपने अनुकूल बना लेती है । परमात्मा ने इतनी शक्ति दी है कि स्त्री सब कुछ कर सकती है।

●

कथावार्ता का श्रवण अर्थात् भक्तिरसका अमृतकुंभ

– सां.यो. कोकिलाबा, उषाबा (सुरेन्द्रनगर)

तुलसीदासजीने कहा है कि मन का निग्रह करने के लिये कथा श्रवण करनी चाहिये ।

जननी जनक बंधु सुत दारा,
तनु धनु भवन सुहृद परिवारा ।
सबके ममता ताग बहोरी,
मम पद मन हि बांधिबरि डोरी ॥

रामायण में तुलसीदाजीने कहा है कि सभी में से मन हटाकर एक परमात्मा में प्रेम करोगे तो निश्चित ही परमात्मा मिलेंगे । इसलिये सांसारिक बंधनो के त्याग करने का सफल साधन कथा का श्रवण करना । उसके बाद स्वप्न में प्रभु की झांकी का दर्शन होने लगता है । इसे साधारण दर्शन कहा जाता है । बाद में मंदिर में स्थित देव दर्शन को मध्मय कहा गया है । इसके बाद इश्वर का अपरोक्ष दर्शन होने लगे तो इसे उत्तम कहा गया है । जब भक्त को स्थावर जंगल पशु, पक्षी, प्राणी तथा सभी मनुष्यों में इश्वरीय अंश का दर्शन होता है । चित्त में से मन का रोग दूर होते ही भगवान का दर्शन होने लगता है । इस स्थिति पर जब व्यक्ति पहुंचजाता है तब उसका मन स्थिर हो जाता है । संसार के भवरोग में से धीरे धीरे निकलने लगता है । यह योगी अवस्था की प्रारंभिक प्रक्रिया है ।

जिस के मन में ईश्वर का निवास होता है वह राग – द्वेष से मुक्त हो जाता है । वह काम, क्रोध, लोभ, मोह, इर्ष्या, मत्सर इत्यादि से दूर हो जाता है । लेकिन उसका मन तो प्रभु में ही रहता है । उसमें अभिमान का लेशमात्र भी अंश नहीं रहता । ऐसे उत्तम विचार को साकार करने का एक और उपाय है भक्ति । इसके लिये सत्संग करना, कथा श्रवण करना एक मात्र साधन है । कथा श्रवण करने से अन्त:करण के अज्ञान का दरवाजा खुल जाता है । बाद में भक्ति रस ऐसा डूब जाता है कि संसार असार लगने लगता है । कथामृत पान करने का यही आनंद है । जिसे भक्ति का रंग लगा वह अनेकों को भक्तिरस से तरबोर कर देता है ।

आज की दुनिया में नाना प्रकार के भोग विलास, वैभव के नूतन साधन, अपनी तरफ आकर्षित कर रहे हैं । इनसे बचना हो तो अपने घरों में धर्मग्रन्थ का वांचन तथा सत्पुरुषों का सत्संग करते रहना चाहिये । जीवमात्र को कालरुपी नाग डंसने के लिये हरक्षण लपक रहा है, वह किसी को छोड़ता नहीं, उससे बचने के लिये भगवत भजन एवं कथाश्रवण इस के साथ सत्संग परम आवश्यक है ।

इसके लिये एक कहावत है कि ''भय विन होय न प्रीति'' । मरने का भय भगवत प्रेम का योग कराता है । एकवार जिसे कथा में रस हो जाता है वह अमृतकुंभ का पान बार बार करने की इच्छा करता है ।

तन, मन, धन की शुद्धि कथा के रसपान से होती है । तीर्थस्थान से तन की शुद्धि, ईश्वर का सतत स्मरण से मन की शुद्धि दान करने से धन की शुद्धि होती है । हमें तो दूसरों के दोष देखने की टेव पड गयी है । दूसरों के दोष देखने की अपेक्षा अपना दोष देखना चाहिये । मनुष्य में यदि कोई दोष है तो वह अपने को निर्दोष समझता है । सत्संग के विना स्वदोष दर्शन संभव नहीं । हमारे दु:ख का कारण एक मात्र यही है । मनुष्य जब ईश्वर से दूर होता है उसकी दशा तथा दिशा दोनो विगड़ जाती है । इसलिये कथा, भक्ति, सत्संग के माध्यम से ईश्वर के सन्निकट होना संभव है । इससे धर्म बढेगा, धर्म से सम्पत्ति मिलेगी । संपति झगड़ा की जड़ है, लेकिन संमति सुख एवं शांति को देनेवाली है । सन्मति कथा श्रवण से होती है । घर में भोग-विलास का साधन हो सकता है लेकिन वह शांति का साधन नहीं हो सकता ।

शांति बजार में नहीं मिलती । वह कथा में सत्संग में मिलती है। भगवान स्वामिनारायण संतो को गाँव-गाँव में संतो को भेंजकर कथामृत पान करवाकर भक्तों को अमृतपान कराते थे, जिससे वे निर्विसयी बन जाते थे। एकांतिक भक्त हो जाते थे । इसी तरह पंच विषयों से मुक्ति पाने के लिये आजभी यदि कथा, सत्संग, भक्ति इत्यादि की जाय तो निश्चित ही आत्मकल्याण संभव हो जाय । इस के लिये भगवत् समर्पित जीवन होना आवश्यक है।

•

टोरडा में मू.अ.मू. गोपालानंद स्वामी की लीला

- जानकी निकीकुमार पटेल (गुलाबपुरा)

अपने स्वामिनारायण संप्रदाय में हजारो संत हो गये। उन संतो ने थोड़े समय में ही गुजरात की काया पलट दी थी।

इन्ही में एक गोपालानंद स्वामी थे।''जिस तरह जल के विना कल्पना कठिन है उसी तरह गोपालानंद स्वामी के विना संप्रदाय की भी कल्पना संभव नहीं है।

वे भी भगवान स्वामिनारायण के साथ ही प्रगट हुये थे।यह वात निष्कुलानंद स्वामीने ''भक्ति चिंतामणी'' में लिखी है।

''योगी पूर्व जन्म ना, जेने वाला संगाथे वाल ।
प्रभु संगाथे प्रगट्या खरा, भक्त नाम खुशाल ॥''

उनके जन्म के समय बहुत सारे चमत्कार हुये थे। जन्म से ही उनके अनेकों चमत्कार वहाँ के गाँव वालो को तथा अगल बगल के गाँव वालों को अनुभव गम्य रहा है ।

वे बचपन में अनेक चमत्कार किये थे । जैसे झूले मेंउनके मस्तक पर सर्प, उनके घर में चोरी के लिये आये चोरों को मुख के प्रकाश से अचम्भा में डाल दिया था। टोरडा में सूर्य रथ को उतारकर उसमें कपिला गाय का प्रस्थान, भगवान शामलाजीके साथ मैत्री, वरसात करना, महाराग दूर करना, मूर्ख गौरी शंकर को पंडित बनाना, महुआ को मीठा करना, वाघ के पंजे से तथा सर्प दंश से लोगों को बचना, इस तरह अनेकों चमत्कार किये जिसे लिखने बैठें तो एक पुस्तक हो जाय।

ये चमत्कार स्वामिनारायण भगवान तथा गोपालानंद स्वामी के प्रत्यक्ष होने का प्रमाण देते हैं। गोपालानंद स्वामी को अन्तर्ध्यान हुये १५० वर्ष हो गये फिर भी आज वे प्रत्यक्ष हैं । वर्तमान में चमत्कार प.पू.ध.धु. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजकी आज्ञा से टोरडा मंदिर का ६० वां पाटोत्सव तथा गोपालानंद स्वामी की २३२ वीं जन्मजयंती के अवसर पर श्रीमद् भागवत पंचाहन पारायण तथा ६० कुंडी महाविष्णुयाग का आयोजन किया गया था। जिस में धर्मकुल तथा अमदावाद देश तथा वडताल देश के संत पार्षद तथा सां.यो. बहने भी पधारी थी।

इस प्रसंग के प्रथम दिन इतनी गर्मी थी फिर भी महंत स्वामी तथा हरिभक्तों की देखरेख में कूलर पंखे इत्यादि की व्यवस्था की गयी थी। परंतु ऐसे गाँव में तत्काल व्यवस्था होना असंभव था, फिर भी स्वामी एवं महाराज की कृपासे चमत्कार हुआ रात में खूब बरसात हुआ जिससे सारा वातावरण ठन्ढक में परिवर्तित हो गया।

गोपालानंद स्वामी की कृपा से इतना बरसात होने पर भोजन में तथा कथा में, यज्ञ शाला में कुछ भी नुकसान नहीं हुआ। अन्यत्र गाँव में काफी नुकसान हुआ था । जो लोग समर्थ नहीं थे वे भी इस कार्यक्रम में सहयोग किये थे।

ऐसी कृपा महाराज की हुई तथा गोपालनंद स्वामी की हुई कि सारा वातावरण परिवर्तित हो गया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अपने आशीर्वाद में बताया कि यह सब गोपालानंद स्वामी का चमत्कार है। यह गोपालानंद स्वामी की एक निष्ठा का परिणाम है। गोपालानंद स्वामी इतने चमत्कारिक थे कि स्वयं

महाराज भी इस वात को जानते थे। वे इतने ऐश्वर्य शाली थे फिर भी महाराज की आज्ञा के विना कुछ भी नहीं करते थे। प्रभु की आज्ञा सत्संग का पोषण करते रहे। पू. महाराजाश्रीने यह भी बताया कि लोहे के चना चबाने की वात है निर्मानी होकर रहना हम सभी की यह भाग्य है कि हमे यह संप्रदाय मिला और भगवान श्रीनरनारायणदेव मिले हैं।

जिस तरह गुरु के विना ज्ञान अधूरा है उसी तरह संप्रदाय में धर्मकुल की निष्ठां तथा निष्ठावान संत संप्रदाय को मिले है । ऐसे संत न होते तो हम भगवान स्वामिनारायण तथा नरनारायणदेव को पहचान नहीं पाते।

संप्रदाय का सर्वप्रथम मंदिर अमदावाद में श्री स्वामिनारायण मंदिर का जीर्णोध्धार कार्य में सेवा करने के संदर्भ में

अपने इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने संप्रदाय का सर्वप्रथम मंदिर अमदावाद कालुपुर में स.गु. आनंदानंद स्वामी से करवाया था। समय के प्रवाह के साथ इस मंदिर का निर्माण कार्य दो दशक में पूर्ण हुआ था इस प्रसादीभूत मंदिर में फेर फार भले हो लेकिन स्थिति वही रहनी चाहिये इस आशय से शिल्प स्थापत्य का ध्यान रखकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पुरातत्व विभाग के विशेषज्ञो द्वारा सलाह प्राप्त करके जीर्णोध्धार करने का आदेश दिया है। राजस्थान के गुलाबी पत्थरो पर गढाई का कार्य कराकर लगाने का कार्य चल रहा है। संप्रदाय के सर्व प्रथम मंदिर का सिंहासन भी सुवर्ण वेष्टित किया जा रहा है। जिस मंदिर में स्वयं श्रीहरिने अपनी वाहों में श्री नरनारायणदेव को भरकर प्रतिष्ठित किये हों वह मूर्ति कितनी प्रतापी होंगी। अपने कल्याण के लिये तथा सदा सुख प्रदान के लिये प्रभु ने श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा की थी। इस भगीरथ कार्य में सुवर्णदान, रुपये का नगद दान, अथवा किसी प्रकार से अन्य सेवा कार्य करके हरिभक्त अपने जीवन को धन्य बनायें। इस सेवा को श्रीहरि अपनी स्मरणिका में लेंगे। इसलिये अमदावाद मंदिर के कोठार में अपना कीमती दान करके पक्की रसीद प्राप्त करलेंगे। ऐसा अवसर जीवन में पुनः नहीं आयेगा। इसका अवसर चूकते नहीं देना, अहोभाग्य से वंचित न रहजांय, इसलिये इसका लाभ अवश्य लीजिये।

संप्रदाय का गौरव

अपने प.भ. श्री रतिभाई खीमजीभाई पटेल (मंदिर के सदस्य) के सुपुत्र प.भ. श्री केतनभाई पटेल को गाईहेड द्वारा ता. १७-३-२०१३ को आयोजित रियल एस्टेट एवोर्ड समारंभ में श्रेष्ठ एपार्टमेन्ट बंग्लोज, कोमर्शियल कोम्प्लेक्ष तथा उसके मेन्टेन्स जैसे विविधकेटेगरी के एवोर्ड दिये गये थे। जिसकी श्रेष्ठ कामगीरी डी.एन.बी. कंपनी द्वारा निश्चित की गयी थी। जिस में एलीगेन्सग्रुप द्वारा प्रोजेक्टेड स्कीम ''अर्थ हरीटा'' को स्वतंत्र बंग्लोज के प्रोजेक्ट की केटेगरी में २०१३ का सर्वश्रेष्ठ प्रोजेक्ट एवोर्ड किया गया था। उनकी ऐसी सुंदर प्रगति सुनकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री खूब प्रसन्न होकर उत्तरोत्तर प्रगति के आशीर्वाद दिये थे।

•

विसनगर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा श्री स्वामिनारायण अंक के स्थाई सदस्य बनाने की दौड़

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल विसनगर के युवको द्वारा श्री स्वामिनारायण अंक के स्थायी सदस्य बनाने का कार्य चालू है। २०० जितने सदस्य हो चुके हैं। साहित्य प्रेमी हरिभक्तों की भी सेवा लेनी चाहिये। इसके लिये हरिभक्त संपर्क करे। (विसनगर युवक मंडल)

•

हालार मूली देश

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से जामसर पारायण प्रसंग पर ४० जितने आजीवन सदस्य हुये हैं। जिस में प.भ. अरविंदभाई मावजीभाई चौहाण ने (सुरत) सौजन्य बनने का लाभ लिया था।(प्रागजीभाई भगवानजी)

सत्संग समाचार

चैत्र शुक्ल पक्ष-९ राम नवमी को सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का प्राक्ट्योत्सव अहमदाबाद मंदिर में मनाया गया

इष्टदेव परम कृपालु परमात्मा सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान का इस पृथ्वी पर प्राकट्य हुआ उस प्रसंग को चैत्र शुक्ल पक्ष-९ ता. २०-४-१३ मे २३२ वर्ष पुर्ण हुए । आज श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. पड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से उत्सव का सुंदर आयोजन किया गया।

प्रातः ६-३० बजे अक्षरभुवन में बिराजमान बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथो से षोडशोपचार महाविधिमहाभिषेक धामधूम से सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग का लाभ हजारो हरिभक्तों ने लिया । पुजारी स्वामी परमेश्वरादसजी की प्रेरणा से पाटोत्सव के यजमान प.भ. जसवंतभाई ठक्कर तथा चि. केतनभाई ठक्कर परिवार थे। प्रासंगिक सभा में सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का महिला माहात्म्य पू. महंत स्वामी ने कहा। यजमान परिवार की सेवा की प्रशंसा की। प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से बाल स्वरुप घनश्याम महाराज की उन्नकूट आरती तथा श्रृंगार आरती की गई . रात में ८-३० बजे मंदिर में प्रसादी के प्रांगण में गायक कलाकार श्री जयेशभाई सोनी द्वारा सुंदर कीर्तन भक्ति रास का कार्यक्रम किया गया।

रात्र में १०-१० मिनिट को श्रीहरि प्राकट्योत्सव आरती पपू. लालजी महाराजश्रीने उतारी थी । हजारो हरिभक्तों ने प्राकट्योत्सव के दर्शन किये। पंजीरी का प्रसाद दिया गया। समग्र प्रसंग कोठारी पार्षद दिगंबर भगत, ब्र. राजु स्वामी, जे.पी. स्वामी, योगी स्वामी, जे.के. स्वामी, भक्ति स्वामी तथा राम स्वामी सभीने सुंदर आयोजन किया था। (शा. नारायणमुनि स्वामी)

सर्वोपरि तीर्थ छपैया गौघट में जीर्णोधार की प्रेरणा सेवा

प.पू.ध.धु. आचीर्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद तथा प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव गादी के निष्ठावान प.भ. नंदुभाई खेमचंदभाई पटेल (मोटप - वर्तमान सुरत) तथा प.भ. भगवानजीभाई (अंबाला-सुरत) परमार आदि हरिभक्तोंने सर्वोपरि छपैया में बाल स्वरुप घनश्याम महाराज के दिव्य चरणों से अंकित पवित्र तीर्थ गौघाट में जहाँ पाताल गोमतीजी प्रगट हुई है ऐसी प्रसादी के अलौकिक स्थान में पवित्रता स्वच्छता हेतु, गौघाट के आसपास ८०० फिट लंबी आर.सी.सी. बीम कोलम, प्लास्टर की दिवाल तथा सुंदर मजबूत लोई का दरवाजा, कलर आदि काम एक महिना रहकर तन-मन-धन से सेवा, प्रदान करके उदाहरण दिया है। प.भ. नंदुभाई अपनी पुत्री के विवाह की कुल रकम गौघाट की सेवा हेतु समर्पित कर दी। इस से पहले श्री स्वामिनारायण म्युजम में भी इसी प्रकार उन्होंने सेवा स्वरुप रकम प्रदान की थी। अन्य हरिभक्तों में श्रीमती कृष्णाबहन मंदुभाई, केतन, मितल, शांताबहन भगवानजी, गुणवंतभाई, प्रफुलभाई भरतभाई, शिल्पा दर्शितकुमार पटेल, हेतल प्रशांतकुमार पटेल, जोधाणी लक्ष्मणभाई भुराभाई, वल्लभभाई लक्ष्मणभाई जोधाणी, रमेशबाई देवजीभाई मूलजी भाई तथा जयंतीभाई हिरजीभाई आदि हरिभक्तों की सेवा निहार के प.पू. बड़े महाराजधी तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सभी हरिभक्तगण पर बहुत प्रसन्न हुए थे। अभीभी छपैया के प्रसादी के स्थानों का जीर्णोध्धार का सेवा काम उपरोक्त हरिभक्तगण करने बोले है। छपैया मंदिर के महंत ब्र.स्वा. वासुदेवानंदजी तथा मुखत्यारश्री ने भी भक्तों की सेवा की प्रशंसा की। सभी भक्तों को इस की प्रेरणा लेनी चाहिए।

(हजुरी पार्षद कनु भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया ब्रहाभोजन तथा पाटोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १०८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से तथा अ.नि.स.गु. शा.स्वा. हरिगोविंददासजी, स.गु.शा.स्वा. माधवप्रसाददासजी, स.गु. शा.स्वा. गुरुप्रसाददासजी (कांकरीया महंतश्री) महंत शा.स्वा. आनंदप्रसाददासजी तथा पुजारी स्वामी देवकृष्णदासजी की प्रेरणा से तथा

कांकरिया मणीनगर के हरिभक्तों के साथ सहकार से श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में ता. १६-३-२०१३ को ब्रह्मभोजन तथा ठाकुरजी का पाटोत्सव महोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

ता. १६-३-१३ के शुभ दिन पर प.पू.ध.धु. महाराजश्री के वरद हाथों से ठाकुरजी का तथा कष्टभंजन देव का षोडशोपचार महाभिषेक, अन्नकूट आरती करके सभा में बिराजमान हुए।

प्रासंगिक सभा में पधारे हुए संतो की अमृतवाणी के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने ब्रह्मभोजन का महत्व तथा कष्टभंजनदेव का महाप्रताप कहकर आशीर्वाद दिया। इस प्रसंग पर बहनो को आशीर्वाद देने हेतु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री भी पधारी थी । हजारो भूदेवो श्री स्वामिनारायण महामंत्र जप के साथ सुदंर लड्डुओं का प्रसाद खा कर तृप्त हो गये थे।

इस प्रसंग पर ठाकुरजी की सेवा में पू. देव स्वामी, सभा संचालन, शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी, रसोई में पा. नरोत्तम भगत, नीरुभाई ठाकर, शांतिलाल महाराज तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा श्रीहरि महिला मंडल ने सुंदर सेवा की। (डॉ. हिरेन कांकरिया)

प्रसादीभूत लालोडा (ईडर) में श्रीमद् सत्संगिभूषण पारायण

योगीवर्य गोपालानंद स्वामी तथा आदि आचार्य प.पू. श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के दिव्य चरणों से अंकित ऐसे लालोडा धाम में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आवर्तमान आचार्यश्री की आज्ञा से ता. १-३-१३ से ता. ७-३-१३ तक वयोवृद्ध संत घनश्यामजीवनदासजी के संकल्प से श्रीमद् सत्संगीभूषण की कथा घनश्याम स्वामी (माणसा) के वक्तापद पर संपन्न हुइ। इसके साथ संहिता पाठ तथा १-३-१३ को पोथीयात्रा भी निकाली गयी थी। जानकी वल्लभ स्वामीजी, पू. आत्मप्रकासदासजी, पू. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदाजी (जेतलपुरधाम) तथा स्वा. जगतप्रकाशदासजी द्वारा दीप प्रागट्य किया गया था। ता. ३-३-१३ को प्रातः के सत्र में भावि आचार्य लालजी महाराजश्री तथा पपू.अ.सौ. गादीवालाजी सभी को दर्शन एवं आशीर्वाद देने के लिये पधारी थी । प.पू. लालजी महाराजश्री समस्त सभा को हार्दिक आशीर्वाद प्रदान किये थे । ता. ५-३-१३ को प्रातः बड़े महाराजश्री तथा बहनों को दर्शन आशीर्वाद देने के लिये पपू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी । प.पू. बड़े महाराजश्री स्वामी के साथ पुराने सम्बन्धो को स्मरण करके सभी को आशीर्वाद दिये थे। ता. ७-३-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी के मंडल के साथ पधारे थे। उन्हीं की उपस्थिति में १०१ दिन की अखंड महामंत्र धुन, १०१ दिन तक जनमगंल पाठ महापद यात्रा, व्यसन मुक्ति अभियान, पू. स्वामीश्री का सन्मान, श्री घनश्याम जन्मोत्सव, रासोत्सव, फुलदोलोत्सव, महापूजा इत्यादि का कार्यक्रम संपन्न हुआ था। प.पू. आचार्य महाराजश्री ने ठाकुरजी की आरती करके भव्य शोभायात्रा में सामिल हुए थे । इसके अलांवा सास्कृतिक कार्यक्रम, रोगनिदान केम्प, रक्तदान केम्प, प्रागट्योत्सव का सुंदर कार्यक्रम किया गया था।

पारायण प्रसंग पर स्वामी धर्मस्वरुपासजी, स्वामी विवेकासागरदासजी, मुकुन्द स्वामी, बलदेव स्वामी, सुखनंदन स्वामी, छोटे धर्मस्वरुपदासजी, नरेन्द्र भगत, माधव स्वामी, विष्णु स्वामी, नीलकंठ स्वामी, इत्यादि संतो की तथा गाँव के हरिभक्तों की सेवा सराहनीय थी। सभा संचालन एच.जी. स्वामीने किया था। पारायण का संचालन विश्वप्रकाशदासजी स्वामीने किया था। (भूमित पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (श्रीनगर) ३४ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा संतो की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का ३४ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

प.पू. आचार्य महाराजश्री २९-३-१३ तो जब पधारे उस समय सर्व प्रथम ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में विराजमान हुए थे। सभा के यजमान परिवार ने पूज्य महंत महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था । इस प्रसंग पर अनेकों धाम से संत पधारे हुए थे।

सभा संचालन स्वा. चैतन्यस्वरुप दासजीने किया था। प.भ. लक्ष्मणभाईने मंदिर के जीर्णोद्धार की पूर्व भूमिका बताई थी । अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। (पटेल दशरथभाई)

न्यु राणीप में मंदिर निर्माण के लिये संकल्प के साथ श्री नरनारायणदेव की पदयात्रा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से न्यु राणीप विस्तार में श्री नरनारायणदेव देश का

स्वामिनारायण मंदिर बनाने के लिये जमीन की बात चल रही थी, किसी विशेष कारण से बिलंब हो रहा था । इससे संत हरिभक्तों ने संकल्प किया था कि यह कार्य सम्पन्न हो जायेगा तो नारायणघाट से पैदल चलकर श्री नरनराायणदेव के दर्शनार्थ हम सभी जायेंगे । संकल्प करने के साथ कार्य पूर्ण हुआ और जमीन मिल गयी । श्री नरनारायणदेव का यह चमत्कार ही था । ता. १४-४-१३ रविवार प्रातः ५-१५ बजे न्यु राणीप, राणीप नारायणघाट मंदिर बाद में वहाँ से चलकर श्री नरनारायणदेव दर्शन करके यात्रापूर्ण की गयी थी । अमदावाद मंदिर में सभा मंडप में १ घंटे तक मंत्रजाप की धुन की गयी थी ।

पदयात्रा में नारायणघाट मंदिर के महंत देव स्वामी तथा पी.पी. स्वामी संत मंडल के साथ इस पदयात्रा में जुडे थे। (श्री न.ना.देव युवक मडंल, न्यु राणीप)

महेसाणा गाँव में कलशीबाई के घर पर चरणारविंद का चतुर्थ स्थापना दिन संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा महेसाणा मंदिर के महंत नारायणप्रसाददासजी के आयोजन से परभक्ताकलशीबाई के घर एकादशी की सुबह में श्रीजी महाराज रात्रमें पधारकर जिस पर अपने चरणारविंद की छाप दिये थे उसे कलशीबाई दीवाल के भीतर सुरक्षित रखी थी । संयोगवश आज से ४ वर्ष पूर्व वह चरणारविंद वाला पत्थर एकादशी के दिन मिला था । जिसे २३-३-१३ को ४ वर्ष पूरा होते ही चतुर्थ स्थापना दिन के रुप में प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों धूमधाम से मनाया गया था । प्रथम प.पू. बड़े महाराजश्री का गाँव के भक्तों द्वारा स्वागत किया गया था । इसके बाद कलशी बा के घर ठाकुरजी के चरणारविंद का पूजन, अभिषेक, आरती, अन्नकूट इत्यादि कार्यक्रम प.पू. बड़े महाराजश्री अपने बरद हाथों से किये थे । बाद में सभा में बिराजमान हुए जहाँ पर श्यामचरण स्वामीने सभा के प्रतिनिधिरुप में प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन किया गया और आरती हरिभक्तों की थी । स्वा. नारायणप्रसाददासजी स्वामी उत्तमप्रिय स्वामी, विश्वविहारी स्वामीने प्रसंगोचित प्रवचन किया था । अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । कार्यक्रम का संचालन भक्ति स्वामीने किया था । यजमान के घर प.पू. महाराजश्री का पदार्पण हुआ था । रात्रि में भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया था। (कोठारीश्री)

भात गाँव में प्रतिष्ठाविधिसम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पूज्य पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से भात गाँव में ता. १९-३-१३ को पाटोत्सव सम्पन्न हुआ था । पूजन विधिदास स्वामीने करवाया था । बाद में सत्संग सभा में जेतलपुर से शा. भक्तिनंदन स्वामीने कथा की थी । इस प्रसंग पर श्याम स्वामी, भक्तिवल्लभ स्वामी, उत्तमप्रिय स्वामी, पधारे थे । अन्नकूट की आरती बे बाद सभी महाप्रसाद ग्रहण किये थे । पाटोत्सव के यजमान प.भ. गिरीशभाई नाराणभाई पटेल थे।

निर्माणाधीन स्वामिनारायण मंदिर कलोल पंचवटी में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवं पूज्य पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से निर्माणधीन श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल पंचवटी में एकादशी को सत्संग सभा का आयोजन किया गाय था । जिस में जेतलपुर से भक्तिनंदन स्वामीने अपने कथा के माध्यम से श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य समझाया था । साथ में श्याम स्वामी तथा उत्तम स्वामी भी पधारे थे ।

(स्वा. विश्वप्रकाशदासजी, कलोल महंतश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कठलाल में प्रतिष्ठा विधिसम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवं पूज्य पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से कठलाल में विराजमान देवों का पाटोत्सव १७-३-१३ रविवार को धूमधाम के साथ मनाया गया था । षोडशोपचार विधिसे देव की महापूजा की गयी थी । सत्संग सभा में जेतलपुर से भक्तिनंदन स्वामी तथा हरिप्रसाद स्वामी पधारकर कथा किये थे । इस प्रसंग पर विश्वप्रकाश स्वामी, श्यामचरण स्वामी, भक्तिवल्लभ स्वामी, उत्तमप्रिय स्वामी पधारे थे ।

अन्नकूट की आरती के बाद सभी ने महाप्रसाद ग्रहण किया था । पाटोत्सव के यजमान प.भ. दिलीपभाई पटेल थे। (स.गु. महंत स्वा. के.पी. स्वामी, जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोली प्रतिष्ठा विधिसंपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवं पूज्य पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से कलोली में विराजमान देवों का पाटोत्सव ३०-३-१३ को धूमधाम के साथ मनाया गया था। प्रभु का षोडशोपचार से पूजन किया गया था। जेतलपुर से शा. भक्तिनंदनदासजी, स्वामी हरिप्रकाशदासजीने कथा प्रवनच किया था । इस प्रसंग पर महंत के.पी. स्वामी, विश्वप्रकाशदासजी, श्यामचरण स्वामी, भक्तिवल्लभ स्वामी, उत्तमप्रिय स्वामी, इत्यादि संत पधारे थे। अन्नकूट की आरती के बाद सभी प्रसाद ग्रहण किये थे। (कोठारीश्री)

जेतलपुरधाम निवासी रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराजका वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवं पूज्य पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव ३-४-१३ को धूमधाम से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथो संपन्न हुआ । २-४-१३ को होमात्मक महाविष्णुयाग का आयोजन किया गया था। ता. ३-४-१३ को ठाकुरजी की मंगला आरती, महापूजा, बलदेवजी का महाभिषेक, घनश्याम महाराज का महाभिषेक किया गया था। इस के बाद श्रृंगार आरती तथा यज्ञ की पूर्णाहुति की गयी थी । इस प्रसंग पर प.पू. गादीवालाजी पधारी थी । जब प.पू.आचार्य महाराजश्री सभा में पधारे उस समय पू. श्याम स्वामी तथा भक्तिवल्लभ स्वामी ने पूजन किया था। पाटोत्सव के यजमान मणीबाई जीवराम पटेल (खांडवाला) परिवार ने आरती किया था। इस प्रसं गपर ब्र. अविनाशानंदजी तथा ब्र. वैष्णवानंदवर्णि रचित ग्रंथ ''श्रीहरिलीला सिंधु'' का विमोचन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से किया गया था। साथ में ग्रंथ का भाषांतर करने वाले महेसाणा के महंत स्वामी उत्तमप्रियदासजी को तथा यजमान पचाणभाई का प.पू. महाराजश्री के हाथों समान किया गया था। इस के साथ ही इन्द्रप्रुरा गाँव में चौधरी परिवार ने मंदिर निर्माण के लिये जमीन भेंट करके प.पू. महाराजश्री की कृपा प्राप्त की थी। अनेकों धाम से करीब ८० संत पधारे थे। जिस में अमदावाद, मूली, भुज से सां.यो. बहने भी पधारी थी। संतो के प्रवचन के बाद प.पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। जेतलपुर के संतो को महाराजश्रीने प्रसन्नता का आशीर्वाद दिया था। अन्नकूट आरती के बाद महारप्राद लेकर कार्यक्रम को पूर्ण किया गया था। समग्र आयोजन जेतलपुरधाम के संतो द्वारा किया गया था। जिस में सहयोग देने वाले मंदिर के स्टाफ, बापुनगर, माडंल, नाना उभडा, जेतलपुर के युवान, एम.एस. आई.टी. के युवान, बापुनगर की महिला मंडल, जेतलपुर की रेवती मंडल तथा ज्ञात अज्ञात सेवा करकनेवालों की सेवा सराहनीय थी। (महंत के.पी. स्वामी तथा संत मंडल, जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर काशीन्द्रा का सप्तम पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवं पूज्य पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से काशीन्द्रा में विराजमान देवो का पाटोत्व ता. ४-४-१३ को धूमधाम से मनाया गया था। प.पू. बड़े महाराजश्री के स्वागत के लिये गाँव के बाहर तक लोग आये हुए थे । इसके बाद पुरुषों के मंदिर में अन्नकूट की आरती करके बहनों के मंदिर में पूजन-अभिषेक के बाद आरती प.पू. बड़े महाराजश्री ने किया था। सत्संग सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन किया गया था। जेतलपुर से पू.पी.पी. स्वामी, जमीयतपुरा से घनश्याम स्वामी, हरिप्रकाश स्वामी, धोलका से पूर्णप्रकाश स्वामी, श्याम स्वामी, के.पी. स्वामी, भक्ति स्वामी, भक्तिनंदन स्वामी पधारे थे। इस अवसर पर संतो ने प्रसंगोचित प्रवचन किया था । प.पू. बड़े महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। यजमान के घर प.पू. महाराजश्री पदार्पण किये थे। भक्त भोजन के बाद स्वस्थान प्रस्थान किये थे।

(महंत के.पी स्वामी, जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर का १७५ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवं पूज्य पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का १७५ वाँ पाटोत्सव ता. ७-४-१३ को धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग पर ६-४-१३ को रात्रि सभा का आयोजन किया गया था तथा देवों का पूजन किया गया था। जेतलपुरधाम से पू.पी.पी. स्वामी, भक्तिनंदन स्वामी, घनश्याम स्वामी,

यज्ञप्रकाश स्वामी द्वारा भगवान का अभिषेक किया गया था । बाद में अन्नकूट की आरती की गयी थी । सभा में पूज्य पी.पी. स्वामी तथा घनश्याम स्वामीने कथा की थी । सभा में बहनों के मंदिर निर्माण की घोषणा की गयी थी । आगामी १७५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव माने की घोषणा की गयी थी । पाटोत्सव के यजमान श्रीजी ग्रुप थे । सभी आगन्तुक प्रसाद लेकर प्रस्थान किये थे ।

(शा. भक्तिनन्दनदास, जेतलपुरदाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोठंबा की प्रतिष्ठा विधिमहोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवं पूज्य पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से कोठंबा मंदिर का महोत्सव ८-४-१३ को धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसं गपर ठाकुरजी का षोडशोपचार से महापूजा की गयी थी । बाद में जेतलपुरधाम से पधारे हुए पू.पी.पी. स्वामी द्वारा भगवान का वेदोक्त विधिसे अभिषेक किया था । इस प्रसंग पर भक्ति स्वामी, घनश्याम स्वामी, यज्ञप्रकाश स्वामी ने सभा का संचालन किया था । अंत में पी.पी. स्वामीने कथाकरके सभी को आनंदित किया था । श्रीजी महाराज के कृपापात्र श्री वासुदेवभाई जोषी जो सत्संग में से बिदाई लेकर अक्षरधाम का सुख प्राप्त कर रहे थे उस समय सभीने महामंत्रकी धुन करके प्रसाद ग्रहण करके स्वस्थान के लिये प्रस्थान किये थे। (भक्तिनंदन स्वामी, जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर राबडिया में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवं पूज्य पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर राबडिया में ता. ७-४-१३ को सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में जेतलपुरधाम के भक्तिनंदन स्वामी, यज्ञप्रकाश स्वामी कथा करके सभी ज्ञान प्रदान किया था । श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य भी समझाया था । (महंत वी.पी. स्वामी, जेतलपुरधाम, गोपालभाई काछिया, राबडिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा प्रतिष्ठा तिथि महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का वार्षिक महोत्व ता. २४-३-१३ को धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर हरिकृष्ण महाराज की षोडशोपचार से पूजा की गयी थी । बाद में जेतलपुरधाम से पधारे हुए पूज्य पी.पी. स्वामी, स.गु. श्याम स्वामी, सूर्यप्रकाश स्वामी इत्यादि संतो द्वारा वेदोक्त विधिसे अभिषेक किया गया था । इस प्रसंग पर भक्तिनंदन स्वामी, विश्वस्वरुप स्वामीने सभा में प्रसंगोचित प्रवचन किया था । अंत में पूज्य पी.पी. स्वामीने कथा का रसपान करवाया था । ठाकुरजी की समूह आरती की गयी थी । बाद में ध्वजा चढाने का कार्य किया गया था । सभी महाप्रसाद लेकर धन्यता का अनुभव किये थे ।

(न.ना.देव युवक मंडल, बालवा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल १०१ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का १०१ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. ३१-४-१३ को धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर हरिकृष्ण महाराज की षोडशोपचार महापूजा रखी गई थी । बाद में जेतलपुरधाम से पधारे हुए श्याम स्वामी तथा उत्तमप्रिय स्वामी, नारायणप्रसाद स्वामी इत्यादि संतो ने वेदोक्त विधिसे भगवान का अभिषेक करवाया था । इस प्रसंग पर स्वा. भक्तिनन्दनदासजी ने कथाश्रवण करवाया था । समूह आरती तथा ध्वजारोपण का कार्य भी किया गया था । पाटोत्सव के यजमान श्री विशालभाई जसुभाई मोहनभाई ठक्कर थे । अन्त में सभी प्रसाद लेकर धन्यता का अनुभव किये थे । समग्र आयोजन माडंल के भक्त तथा को. मुकेशबाई ने किया तआ। (जीतुभाई पटेल - मांडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लुणावाडा में श्री गणपतिजी श्री हनुमानजी की प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा वासुदेवचरणदासजी की प्रेरणा से लुणावाडा कडियावाड मंदिर में श्री हनुमानजी, गणपतिजी का नूतन स्वरुप की प्राणप्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ता. १०-४-१३ से १२-४-३ तक श्रीमद् भक्तिचिंतामणी ग्रंथ का त्रिदिनात्मक कथा डी.के. स्वामी के वक्तापद पर हुई । इसके साथ हरियाग, मारुति यज्ञ, पाटोत्सव-अभिषेक, अनकूट इत्यादि कार्यक्रम हुए थे । प्रथम दिन पप.ध.धु.

आचार्य महाराजश्री पधारे थे, उस समय शोभायात्रा निकाली गयी थी । शोभायात्रा छपैया धाम से कडियावाड प्राचीन मंदिर तक आई थी जहाँ पर प.पू. महाराजश्री आरती पूजन का आरंभ कराकर भक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । ता. १२-४-१३ को पूर्णाहुति के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों अन्नकूट आरती, पूर्णाहुति के बाद हनुमानजी तथा गणेशजीकी प्रतिष्ठा की गयी थी । धार्मिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले बालको को पुरस्कार दिया गया था । इस प्रसं गपर संत पधारे हुए थे । सभा संचालन सत्यप्रकाशजीने किया था ।

(घनश्याम बाल मंडल लुणावाडा)

समौ गाँव में दिव्य सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा आयोजित द्विशताब्दी महोत्सव अन्तर्गत समौ गाँव में हनुमानपुरा में ता. ३१-३-१३ को सुंदर सत्संग सभा का आयोजन किया गया था ।

विसनगर से श्री उदयनभाई महाराजा, चिंतनभाई तथा हीरावाडी अमदावाद श्री नरनारायणदेव युवक मंडल संचालक श्री तथा जयंतीभाई ने कथामृत का पान कराया था । सभा में विसनगर तथा समौ गाँव के हरिभक्तों ने सुंदर लाभ लिया था । (चौधरी मणीभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वेडा गोविंदपुरा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी भक्तवत्सलदासजी की प्रेरणा से यहाँ मंदिर में विराजमान ठाकुरजी का ७१ वाँ वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

ता. ३०-३-१३ को बहनों को दर्शन आशीर्वाद का लाभ प्रदान करने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । श्रीजी महीला मंडल की बहनोंने पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था ।

रामनवमी श्रीहरि के प्रागट्य दिन पर १२ घन्टे की अखंड धुन का आयोजन किया गया था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी ।

(साधु वंदनप्रकाशदास)

टांकिया में २९ वाँ पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ पर सुदंर सत्संग की प्रवृत्ति चलती है । बहनो के आमंत्रण पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी इस गाँव में सर्वप्रथम पधारी थी । मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में २ घंटे तक आशीर्वचन प्रदान की थी । ता. २१-२-१३ प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । इस अवसर पर योगी स्वामी, आनंद स्वामी, नंदकिशोर स्वामी, इत्यादि संत पधारे थे । समग्र कार्यक्रम को. महेन्द्रसिंह, खुमानसिंह ने किया था । प.पू. बड़े महाराजश्री ठाकुरजी की आरती उतारकर भक्तों को आशीर्वाद प्रदान किये थे ।

(वासुदेव स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप का वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा नारायणघाट के दोनो मंहत स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का २८ वाँ तथा बहनों के मंदिर का २४ वाँ पाटोत्सव २२-३-३ को विधिवत मनाया गया था ।

ता. २२-३-१३ को प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों ठाकुरजी का अभिषेक किया गया था । सभा में यजमान प.भ. घनश्यामभाई पटेल परिवारने पपू. बड़े महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । बाद में महंत स्वामी हरिकृष्णदासजीने प्रासंगि उद्बोधन किया था । अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद प्रदान किया था ।

इसके बाद सभी महाप्रसा दलेकर स्वस्थान गमन किये थे । (ऋषिकेश स्वामी इसंड)

आजोल गाँव में क्रमश कथा पारायण तथा श्री घनश्याम जन्मोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा नारायणघाट के दोनो महंत स्वामी की प्रेरणा से इस गाँव में गुरुवार के दिन फिरती सभा होती है । जिस में श्रीमद् सत्संगिभूषण के कथा वक्ता शा. चैतन्यस्वरुपदासजी हुमानजी के प्रांगण में ता. २१-३-१३ को रात्रि ८ बजे से ११ बजे तक घनश्याम जन्मोत्सव की कथा का आनंद दिये थे । इस कथा के दरम्यान कमलेशभाई यजमान बनने का लाभ प्राप्त किये थे । जन्मोत्सव का आनंद बढाने के लिये सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर के विद्यार्थी नृत्य प्रस्तुत किये थे । इसके साथ हिरावाडी युवक मंडल भी इस कार्यक्रम में जुडा था । चैत्र शुक्ल ९ नवमी को स्वा. चैतन्यदासजीने तथा नारायणमुनि स्वामीने श्रीहरि प्रागट्योत्सव की सुंदर कथा की थी । प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

(श्री न.ना.देव युवक मंडल, उ.गु. टीम-५)

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडीया का ६ठा पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर का ६ठा पाटोत्सव ता. २१-३-१३ को प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों धूमधाम से मनाया गया।

ता. २१-३-१३ को ठाकुरजी षोडशोपचार पूजा की गयी थी । जिसके यजमान प.भ. मनुभाई पटेल थे । श्री नरनारयणदेव युवक मंडल द्वारा कीर्तन के बाद सभा को प्रारंभ किया गया था। प.पू. बड़े महाराजश्री ने ठाकरुजी की आरती उतारकर सभा में विराजमान हुए थे। यजमान परिवार ने प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था । स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा स्वा. रघुवीरचरणदासजीने प्रसंगोचित प्रवचन किया था। अन्य सन्तो ने भी आशीर्वाद प्रदान किये थे । अंत में बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद प्रादान किया था।

समग्र सभा का संचालन स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने की थी। (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल घाटलोडीया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर साणंद में समूह महापूजा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के ब्र. स्वामी संतोषानंदजी के मार्गदर्शन में यहाँ के मंदिर में चैत्र शुक्ल-९ ता. २०-४-१३ को हरिभक्तों द्वारा महापूजा का आयोजन किया गया था। प.भ. विपीनभाई (नडीयाद) ने संपूर्ण विधिकराई थी । रात्रि १०-१० बजे घनश्याम महाराज का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

(जे.डी. ठक्कर)

हिंमतनगर श्री नरनारायण महिला मंडल

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के शुभ आशीर्वाद से तथा ईडर के महंत स्वामी की प्रेरणा से तथा श्री नरनारायणदेव महिला मंडल द्वारा यहाँ के मंदिर में सुंदर महापूजा का आयोजन करके गौदान किया गया था। जिसकी यजमान लाभुबहन तथा ताराबहन थी। इस प्रसंग पर सुंदर कथा का आयोजन भी संतोने किया था। (स्वेता बहन मोदी)

कोटेश्वर गुरुकुल में हीरावाडी बाल मंडल द्वारा शिबिर

प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से १४-४-१३ को एक दिवसीय बालशिबिर का आयोजन कोटेश्वर गुरुकुल में किया गया था।

जिस में प्रथम सत्संग परीक्षा, प्रश्नोतरी, भगवान की महिमा, श्री नरनारायणदेव तथा गादी स्थान की महिमा के साथ खेलकूद का भी आयोजन किया गया था। जिस में स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी तथा माधवप्रियादसजी (सिध्धपुर) ने बालकों को सुंदर ज्ञान प्रदान किया था।

(माधव स्वामी)

हीरावाडी (बापूनगर) में श्रीहरि प्रागट्योत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रीहरि प्रागट्योत्सव २०-४-१३ को धूमधाम से मनाया गया था।

इस कार्यक्रम में ठाकुरजी की शोभायात्रा निकाली गयी थी। जिसके यजमान पटेल नर्मदाबहन सोमाभाई सह यजमान पटेल संजयभाई थे । सभा में माधव स्वामीने श्रीहरि के प्रागट्य की सुंदर कथा की थी। डी.के. स्वामी तथा हरिकृष्ण स्वामीने एप्रोच मंदिर में कथा का लाभ दिया था। ६०० जितने लोग शोभायात्रा में थे। युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुपी थी। (माधव स्वामी)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूलीधाम

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूली मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से ता. ११-४-१३ को मूली देश के २५० गाँवों में कोठारी तछा अग्रगण्य हरिभक्तों की एक गोष्ठी का आयोजन किया गया था। जिस में सभी का पता, फोन नम्बर तैयार किया गया, जिस के माध्यम से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी हो सके। सभी एक दूसरे के सम्पर्क में रह सके।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के प्रतिनिधिके रुप में महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी देव स्वामी नारायणघाट से पधारे थे। सभा में चराडवा के महंत स्वामी उत्तमप्रियदासजी, सूर्यप्रकाशदासजी, श्री पंकजभाई, महेशभाई, तथा श्याम सुंदरदासजीने सभी को योग्य मार्गदर्शन दिया था । सभा संचालन शैलेन्द्रसिंह झालाने किया था। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

मूली मंदिर द्वारा सत्संग प्रवृत्ति सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मूली मंदिर के महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजीने गाँव गाँव घूमकर मूल गादी की महिमा को समझाया था। दान-भेंट किसको करने चाहिये इसका महत्व भी समझाया था। इसके साथ ही कृष्णवभभदासजी, सूर्यप्रकाशदासजी, स्वा.

बालस्वरुपदासजी, स्वा. हरिकृष्णदासजी, स्वा. नारायणप्रियणदासजी, इस कार्यक्रम में जुडे थे । गाँव के हरिभक्तों को प्रसन्नकिया गया था। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

रामपरा गाँव में कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वामी जगतप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के गाँव में ता. २०-३-१३ से २२-३-१३ तक स्वा. निष्कुलानंद कृत चिंतामणी ग्रंथ का त्रिदिनात्मक पारायण का आयोजन किया गया था। जिसके यजमान कानाभाई मलसंगभाई तथा उनके पुत्र थे। कथा के वक्ता घनश्यामप्रकादासजी (माणसा) थे। इस प्रसंग पर मूली से स्वा. बालकृष्णदासजी स्वा. लक्ष्मीप्रसाददासजी, स्वा. हरिस्वरुपदासजी, स्वा. ज्ञान, जे.पी. स्वा. अनु स्वामी, चंदु भगत जेतलपुर से पू.पी.पी. स्वामी, अहमदाबाद से भी संत पधारे थे। समग्र आयोजन स्वा. विष्णुप्रसाददासजी ने किया था। कथा की फलश्रुति भक्तचिंदामणी का रसपान करके सभी धन्य बने थे। साथ में ही प.भ. कानभा श्रीहरि के धाम में गये थे।

(महादेवभाई वढेल)

लखतर में श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूली के महंत स्वामी श्यामसुंदर, नारायणघाट के महंत देव स्वामी की प्रेरणा से लखतर मंदिर का प्रथम वार्षिक पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ११-३-१३ से ता. १५-३-१३ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाहन पारायण स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी तथा स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुआ था। पारायण के समय घनश्याम महाराज का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । सायंकलीन सत्र में प.पू. अ.सौ. गादीवालाजी बहनो को दर्शन-आशीर्वाद का लाभ देने के लिये पधारी थी।

ता. १५-३-१३ पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। ग्रामजनो ने उनका भव्य स्वागत किया था। पू. महाराजश्री ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में विराजमान हुए थे । महंत श्यामसुंदरदासजी, देवप्रकाश स्वामी, कृष्णवल्लभ स्वामी, उत्तमप्रियदासजी, भक्तिहरिदासजीने प्रसंगोचित प्रवचन किये थे। बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने यजमान परिवार को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । कथा के यजमान भाईलालभाई महादेवजी दोशी परिवार थे। पाटोत्सव के यजमान भाईलालबाई शामजीभाई पटेल थे। जे. के. स्वामी तथा प्रवीण भगत की सेवा सराहनीय थी।

(कुंज स्वामी, अमदावाद)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत की प्रेरणा से चैत्र शुक्ल-९ को श्रीहरि का प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था। बालकों द्वारा भगवान के जन्म से सम्बन्धित प्रश्नोत्री की गयी थी। पार्षद कनु भगत की प्रेरणा से पटेल लवजी भगतने सुंदर सेवा की थी। (को. स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रतनपर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. नरनारायणदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में चैत्र शुक्ल-९ को श्रीहरि प्रागट्योत्सव के दिन भजन-कीर्तन रात्रि में १०-१० बजे जन्मोत्सव के प्रसंग पर किया गया था। के.पी. स्वामी इत्यादि संतोने सुंदर व्यवस्था की थी।

(कालु भगत)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में फूलदोलोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कालोनिया के मंदिर में ३० मार्च शनिवार सायंकाल ५ बजे से ८ बजे तक श्री नरनारायणदेव जयंती उत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

इस प्रसंग पर विहोकन, चेरीहील, कोलोनिया मंदिर के संत श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य समझाये थे। सडी ने धुन कीर्तन की थी, बाद में संतो द्वारा प्रभु को पुष्पों से अलंकृत दर्शन का सभी को लाभ मिला था । शा.स्वा. सिद्धेश्वरदासजी, महंत स्वा. नरनारायणदासजी तथा घनश्याम स्वामी (विहोकन) से उत्सव के महत्व को समझाया था। संस्कृत का अभ्यास कराने वाले विपीनभाई शुक्ल का महंत स्वामीने शाल ओढाकर संमान किया था।

(प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर न्युजर्सी (विहोकन) में उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में ३१ मार्च रविवार सायंकाल ५ से ८ बजे तक महंत घनश्याम स्वामी तथा हरिभक्तों ने श्री नरनारायणदेव उत्सव

को धूमधाम से मनाया था । स्वामीने उत्सव के महत्व को समझाया था । बालक तथा युवान सभी मिलकर कीर्तन-भक्ति किये थे । प्रेसीडेन्ट - श्री भक्तिभाईने आगामी सत्संग प्रवृत्ति के विषय में जानकारी दी थी । (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलिवलेन्ड में एन.एनडी.वाय शिबिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कलिवलेन्ड में ३०-३१ मार्च को श्री नरनारायणदेव युवक मंडल शिबिर का आयोजन किया गया था । जिस में ३० से ३५ स्थानिक युवक तथा युवतियों ने भाग लिया था ।

जिसका विषय था भगवान तथा भगवान के भक्त । इस विषय पर चर्चा करने के लिये १०० जितने भाई बहन एकत्रित थे । जिस में शास्त्री स्वा. वासुदेवचरणदासजीने सत्संग के विषय में आत्मीयभाव तथा देवके प्रति एक निष्ठा बनाने के लिये कहा । नयें आगन्तुकों को देव, आचार्य, सत्संग इत्यादि पर विशेष जानकारी दी गयी थी । प्रत्येक हरिभक्तों ने स्वामी से पुन: शिबिर का आयोजन पर प्रकाश डाला । ३१ मार्च को श्री नरनारायणदेव जयंती के अवसर पर मंदिर में विराजमान श्री नरनारायणदेव को फूलों से अलंकृत करके उत्सव को संपन्न किया था ।

फूलों के हार बनाने की सुंदर सेवा बहनो ने की थी । अन्त में सायंकालीन आरती का दर्शन करके महाप्रसाद ग्रहण करने के बाद सभी स्वस्थान पर प्रस्थान किये थे ।

(प्रकाशभाई पटेल कलिवलेन्ड)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लुवीसवील कंडकी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से लुवीसवील मंदिर में श्री रामनवमी एवं श्रीहरि जयंती उसव भाग लिये थे । बालकोंने सांस्कृतिक प्रोग्राम किया था । हरिभक्तों की उत्तम सेवा थी । मंदिर में प्रति शनिवार को सभा का आयोजन किया जाता है । यहाँ पर सत्संग का विकास हो रहा है । विशेष में आपका कोई सगा संबंधी लुवीसवील के आसपास रहता हो तो उन्हं यहाँ के विष यमें अवश्य जानकारी देना । ऐसी हरिभक्तों को विन्ती है ।

श्री स्वामिनारायण टेम्पल ९९४८ लुवीसवील
KU ४०२९९ (६३०) ९२६-८५१५

(हसमुखभाई पटेल)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

जांबुडा बावाना (जि. जूनागढ) : श्री रमेशभाई रणछोडभाई मेवाडा कोन्ट्राकटर (बापूनगर) के भान्जे श्री अश्विनभाई धीरुभाई परमार (उम्र २३ वर्ष) ता. ११-२-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये है । उनके परिवार को महाराज धैर्य प्रदान करें ऐसी प्रार्थना ।

अमदावाद : प.भ. बलदेवभाई केशवलाल पटेल (सोजावाला) ता. ७-३-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

तेहिशाला (जि. राजकोट-मूलीदेश) : प.भ. बाबुभाई टांक (मीरारोड मुंबई) के पिताजी जीणाभाई टांक (उम्र ८५ वर्ष) ता. १८-३-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

धांगधा (देवधराडीवाला) : प.भ. भावजीभाई गणेशभाई मोटका (उम्र ८९ वर्ष) ता. ३१-३-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

धोलका : प.भ. रमणभाई अंबालाल पटेल (नेसडावाला) ता. १४-४-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

लीलापुर (मूलीदेश) : प.भ. धनजीभाई ओधवजीभाई पटेल के चि. दिलीपभाई ता. ५-४-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

कोठंबा : श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावान प.भ. वासुदेवभाई मगनलाल जोषी ता. २-४-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

(१) जेतलपुर मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(२) इन्द्रपुरा के चौधरी हरिभक्त मंदिर के लिये जमीन दस्तावेज प.पू. आचार्य महाराजश्री को अर्पण करते हुए ।(३) प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते हुए जेतलपुर मंदिर के पाटोत्सव के यजमान प.भ. मणीभाई खांडवाला परिवार ।(४) कासीन्द्रा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री ।(५) लालोडा (ईडर देश) पारायण प्रसंग पर सभा में आशीर्वचन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू. बड़े महाराजश्री ।(६) लखतर मंदिर (मूलीदेश) प्रथम पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(७) श्रीनगर कलोल मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(८) सर्वोपरि छपैया धाम में प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से प.भ. नंदुभाई (मोटप-सुरत) इत्यादि हरिभक्तो ने प्रसादी के गौघाट का जीर्णोध्धार की सेवा की थी ।

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 “Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

(१) पश्चिम केनेडा में ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ में पू. पी.पी. स्वामी तथा सभा में लाभ लेते हुए हरिभक्त । (२) कोलोनिया मंदिर में रामनवमी के निमित्त सभा में हरिभक्त लाभ लेते हुए । (३) डेट्रोईट मंदिर मे ठाकुरजी का फूलदोलोत्सव प्रसंग पर फूलो से अलंकृत दर्शन । (४) लोस एन्जलस मंदिर में ठाकुरजी का फूलदोलोत्सव प्रसंग पर फूलों से अलंकृत दर्शन । (५) अपने आई.एस.एस.ओ. एटलान्टा मंदिर में प्रथम महिला सत्संग शिबिर में लाभ लेती हुई सत्संगी बहनें ।

श्री नरनारायणदेव के नवनिर्मित छपैयाधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर ज्योर्जीया - बायरन में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

ता. २४-६-२०१३ से ता. ३०-६-२०१३

श्रीमद् भागवत सप्ताह

महा विष्णुयाग

International Swaminarayan Satsang Organization

Shree Swaminarayan Temple
5156 Houser Mill Rd
Byron, GA 31008

Jagadish Offset

Praful Kharsani